

पोथी मित्रने नी ठो-

१. सर्वोदय साहित्य संस्थान,
दृण्णा निवाय, वीकानेर
२. सचयुग त्रय मुद्रीर वीकानेर
३. राजस्थान पुस्तक गृह, वीकानेर

पैली वार ज्ञपी गन १६६४

(C) निरधारी सिंह परिहार १६६४

सगळा अनिकार लेखक रा

मोल चार रुपीया

मुद्रक

वी. एल. सोनी MA, LLB,

शिव प्रिंटिंग प्रेस,

वी जैन पाठशाला के सामने

वीकानेर

MANAKHO (Rajasthani Poem) Girdhari Singh Parihar : Rs. 4 00

अरपण

नृत नोहाग ममर नै सू पै, वा वेंना मावा नै ।
जुनम जग अड जूभण जोगा, जवरा जोधावा नै ॥
मुनक मानखै माथा अरपै, सैनिक सूर जका नै ।
था हाथा चव्हाण "मानखो", ज्यू ओ अरपू वानै ।

भारत रा प्रतिरक्षा मंत्री
श्री वाई. वी. चव्हाण
रे
सबळ हाथां में
घणे आदर स्यूं

-प्रस्तावना-

राजस्थानी के प्रसिद्ध जन्मसिद्ध कवि श्री गिरिधारीसिंह पडिहार की प्रत्येक रचना एक उत्तमकोटि के काव्य की ममत्त विवेकताओं से सम्पन्न होती है। "मानखो" में इनकी यह काव्यशक्ति और भी अधिक प्रखर हो उठी है।

मानखो—का सरस कथा प्रवाह अटूट है और महाकवि माघ की —

“अनुज्जिनार्थं सम्बन्ध प्रबन्धो दुरुदाहर.”

(जिसमें भावों का सम्बन्ध किसी भी स्थान पर टूटता दिखाई न दे ऐसे प्रबन्धों का उदाहरण कठिनता से ही कहीं पर मिलना है।) इस उक्ति की आवश्यकता को पूर्ण कर देना है।

यह काव्य राजस्थानी भाषा को केवल भाषादृष्टि से ही समृद्ध नहीं करेगा अपितु अपने भावगाभीर्य और प्रत्येक महदय के हृदय को हरने वाली वर्णनशैली के कारण अतीत और वर्तमानयुग के प्रत्येक रसिक को राजस्थानी का भक्त बना देगा।

संक्षेप में इसकी प्रत्येक उक्ति में प्रेरणा, प्रतिज्ञा और प्रभाव का प्रादुर्भाव है और यह वीर-प्रसू राजस्थान की वीरधरा के अनुरूप एक अनुपम काव्य है। इसके प्रत्येक पद में यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि इसका रचयिता केवल क्षात्र धर्म के अन्त-ही रक्षक का ही ज्ञाता नहीं अपितु उसका प्रेरयिता भी है.—

सन पन न्याव धरम धरती है, कारण जका न जूझै ।

वै जसग्या ही मरे मरीसा, टांड मरण नी सूझै ॥

'मानखो' की सुभद्रा प्रत्यक्ष रूपसे एक अभिवन्दनीय वीर पति, और एक वीर-प्रसू जननी है। श्री पडिहार का नारी, चित्रगुण परम प्राञ्जल— और भान्तीय नारी के आदर्श का रक्षक है—

नृम धरम करम मरगदा री

नारी नर री रखवाती है ।

नारी निरमल है भगती नी

बळ एतो जूझलै जगती भ्यूँ ।

सुभद्रा एक आदर्श भारतीय नारी है। उसका यह उद्घोष है :—

होवैतो पधरम दिया चटै.

धरती है धरम रखाळा नी ।

इस नारी की ही किन्तु वैदव्य में कौसी दसनीय दगा हो जाती है उसके लिए माघ का प्रबन्धन कठिनता से ही किसी समय में कम से कम प्रभाव देगा—

धा विन्द्या नाजन कुग्ज जियाँ

ह आन्वी ऊमर कुग्नाऊ ।

चित्रमैन की रागी की उम उन्नित मे एक विववा के ममम्न 'जीवन की कर्ण कहानी को प्रतिध्वनित कर दिया है । उनकी यह सम्बेदना परम व्यापक होती है —

वा पीड कळपते प्राणारी ।

छळकी, जड चेतन पर दुलगी ॥

कर्त्तव्यविमुख अपने पतिदेव अर्जुन को जब सुभद्रा ने अपने वाग्वाणी मे विद्ध कर दिया तो अर्जुन कहता है —

वस घरणी वस करो

हिये रो हेमाचळ हालै है ।

घणो भुलसग्यो नर पारथ रो

अव भळ नी भालै है ॥

नारी चित्रण के अतिरिक्त प्रसङ्ग वश कवि के सम्मुख जो भी प्रकरण आया है उसको कवि ने अपने ओजस्वी काव्य मे अमर बना दिया है । काव्य का कथानक परम बाह्य और आन्तरिक-सघर्षमय संग्राम का है परन्तु कवि केवल लोमहर्षण युद्ध का ही प्रेरक नहीं । कृष्ण द्वारा अर्जुन को मूर्च्छित कर देने पर सुभद्रा मे नारी सुलभ कोमलता की भी कमी नहीं और काव्य के अन्त मे जब सबका सुखान्त सम्मेलन होता है तो उस समय भी कवि यह नहीं भूलता कि —

जदुनाथ सुभद्रा पारथ तो, ने' नोरास्यू मन ज्यावैला ।

पण जिका रेत मे रल्या मिनख, अँ किया मनाया जावैला ।

युद्ध की इस विभीषिका से यह धरा कव मुक्त होगी—

नर रै हाथ नरबळी इया, नारायण कद तक होवैली ।

कदताईं धरती सिसक-सिसक, धन इया अमोलख खोवैली ॥

कवि युद्ध का समर्थन केवल उस समय ही करता है जब—

रण जद जद लोक धरम कारण तो परमपुन्न परमारथ है ॥

परन्तु युद्ध हो चाहे परमशान्ति "मानखो" का अन्तिम लक्ष्य यही है कि — मनुष्य अपने मनुष्यत्व की रक्षा करे—

छोटी वात किया थे समभो जकी "मानखो" भेटै ।

भगवती से यही प्रार्थना है कि प्रत्येक मनुष्य "मानखो" से अपने डम मनुष्यत्व की प्राप्ति करे ।

वीकानेर

दिनाक १०-११-६३

विद्याधर शास्त्री एम० ए०

डाइरेक्टर

हिन्दी विश्व भारती, वीकानेर

॥ श्री ॥

भूमिका

'इलियड' में होमर ने लिखा है— 'युद्ध मनुष्य का व्यवसाय है।' यदि हम मानव-इतिहास पर दृष्टि पात करे तो यूनान के अन्ध महाकवि के इस कथन की मत्यता में किसी प्रकार का सन्देह नहीं रहेगा। मनुष्य के विकास की कथा— आदि में अब तक उनके सघष की ही कहानी है। वस्तुतः युद्ध क्यों होता है इस प्रश्न पर चाहे सब एक मत न हो, पर ज्यो ज्यो मानव सम्यता विकसित हुई त्यों त्यों युद्धों की भयकरता अनिवार्य रूप से बढ़ती गयी, इस निष्कर्ष पर किसी का मतभेद नहीं हो सकता।

विश्व की वर्तमान ननावपूर्ण स्थिति ने केवल राजनीतिज्ञों और वैज्ञानिकों को ही चिन्तित नहीं बनाया है बल्कि साहित्यकारों को भी मानव समाज के प्रति अपने दायित्व और कर्त्तव्य के प्रति सावधान किया है। गत ५० वर्षों में होने वाले दो महायुद्धों में धन और जन की जो क्षति हुई वह किसी भी अतीत के युद्ध से अनुत्तरीय है। द्वितीय महायुद्ध के बाद समस्त मानवता भावी विनाश की आशंका में सन्नत हो उठी है। अणु-बम के निर्माण में योग देने वाले प्रसिद्ध वैज्ञानिक आइंस्टीन ने जब तीसरे महायुद्ध में प्रयुक्त किये जाने वाले शस्त्रों के सम्बन्ध में जिज्ञासा की गयी तो उन्होंने उत्तर दिया कि तीसरे महायुद्ध के बारे में तो मैं कुछ नहीं कह सकता पर चौथा महायुद्ध पत्थरों और लाठियों में लड़ा जायेगा। दूरदर्शी वैज्ञानिकों ने आगामी महायुद्ध के जिस सभावित खतरे की ओर संकेत किया है उसकी गभीरता को आज विश्व के अनेक प्रमुख व्यक्ति समझने लगे हैं। विभिन्न राष्ट्रों के पास उत्तरोत्तर बढ़ती हुई आणविक शस्त्रों की संख्या ने मानव-अस्तित्व का सन्देहास्पद बना दिया है। यदि युद्धों की यह परम्परा बन्द न हुई तथा भयकर विनाशकारी आणविक शस्त्रों के प्रयोग पर प्रतिबन्ध न लगा तो निश्चय ही मानव-मभ्यता नष्ट हो जायेगी। शत-सहस्र वर्षों में मनुष्य ने जो प्रगति की है वह कुछ ही क्षणों में क्षार रूप में परिणत हो जायेगी। आज का साहित्यकार भी इस दिक्कत समस्या में विमुख नहीं है। राजस्थानी के प्रसिद्ध कवि श्री गिरधारीमिह पट्टिण का खड-काव्य 'मानवों' युद्ध की विनीषिका की ओर जन-मानस का ध्यान आकर्षित करने के लिए विद्या गया उन्नी प्रकार का सफल कवि-प्रयत्न है।

काव्य-रक्षा — गन्धर्व चित्रमेत अपनी पत्नी के साथ विमान में जा रहा था। उनकी पत्नी ने गाता प्रारम्भ किया। समक्ष सौन्दर्य की भावार प्रतिमा और उनके गाने सुनने ने निमृत् सधुर नगीत की तान ने चित्रमेत को तन्वीन बना दिया।

था विच्छिद्य साजन कुरज जियाँ
हू आखी ऊमर कुग्नाऊ ।

चित्रसैन की राणी की इस उचित में एक चित्रवा के ममस्त 'जीवन की कर्ण
कहानी को प्रतिध्वनित कर दिया है । इनकी यह मन्वेदना परम व्यापक होती है —

वा पीड कळपतै प्राणारी ।

छळकी, जड चेतन पर दुलगी ॥

कर्तव्यविमुख अपने पतिदेव अर्जुन को जब सुभद्रा ने अपने वाग्वाणो में
विद्ध कर दिया तो अर्जुन कहता है —

बस घरणी बस करो

हिये रो हेमाचळ हालै है ।

घणो भुलसग्यो नर पारथ रो

अब भळ नी भालै है ॥

नारी चित्रण के अतिरिक्त प्रसङ्ग वश कवि के सम्मुख जो भी प्रकरण आया
है उसको कवि ने अपने ओजस्वी काव्य में अमर बना दिया है । काव्य का
कथानक परम बाह्य और आन्तरिक-सघर्षमय संग्राम का है परन्तु कवि केवल
लोमहर्षण युद्ध का ही प्रेरक नहीं । कृष्ण द्वारा अर्जुन को मूर्च्छित कर देने पर
सुभद्रा में नारी सुलभ कोमलता की भी कमी नहीं और काव्य के अन्त में जब
सबका सुखान्त सम्मेलन होता है तो उस समय भी कवि यह नहीं भूलता कि —
जदुनाथ सुभद्रा पारथ तो, ने' नोरास्यू मन ज्यावैला ।

पण जिका रेत में रल्या मिनख, अ' किया मनाया जावैला ।

युद्ध की इस विभीषिका से यह घरा कव मुक्त होगी—

नर रै हाथ नरबळी इया, नारायण कद तक होवैली ।

कदताईं घरती सिसक—सिसक, धन इया अमोलख खोवेली ॥

कवि युद्ध का समर्थन केवल उस समय ही करता है जब—

रण जद जद लोक धरम कारण तो परमपुन्न परमारथ है ॥

परन्तु युद्ध हो चाहे परमशान्ति "मानखो" का अन्तिम लक्ष्य यही है कि—
मनुष्य अपने मनुष्यत्व की रक्षा करे—

छोटी बात किया थे समभो जकी "मानखो" भेटै ।

भगवती से यही प्रार्थना है कि प्रत्येक मनुष्य "मानखो" से अपने इस
मनुष्यत्व की प्राप्ति करे ।

वीकानेर

दिनांक १०-११-६३

विद्याधर शास्त्री एम० ए०

डाइरेक्टर

हिन्दी विश्व भारती, वीकानेर

॥ श्री ॥

भूमिका

'इलियड' में होमर ने लिखा है— 'युद्ध मनुष्य का व्यवसाय है।' यदि हम मानव-इतिहास पर दृष्टि पात करे तो यूनान के अन्ध महाकवि के इस कथन की सत्यता में किसी प्रकार का सन्देह नहीं रहेगा। मनुष्य के विकास की कथा— आदि में अब तक उसके सघष की ही कहानी है। वस्तुतः युद्ध क्यों होता है इस प्रश्न पर चाहे सब एक मत न हो, पर ज्यों ज्यों मानव सम्यता विकसित हुई त्यों त्यों युद्धों की भयकरता अनिवार्य रूप से बढ़ती गयी, इस निष्कर्ष पर किसी का मतभेद नहीं हो सकता।

विश्व की वर्तमान तनावपूर्ण स्थिति ने केवल राजनीतिज्ञों और वैज्ञानिकों को ही चिन्तित नहीं बनाया है बल्कि साहित्यकारों को भी मानव समाज के प्रति अपने दायित्व और कर्तव्य के प्रति सावधान किया है। गत ५० वर्षों में होने वाले दो महायुद्धों में धन और जन की जो क्षति हुई वह किसी भी अतीत के युद्ध से अनुलनीय है। द्वितीय महायुद्ध के बाद समस्त मानवता भावी विनाश की आशंका में सन्नत हो उठी है। अणु-बम के निर्माण में योग देने वाले प्रसिद्ध वैज्ञानिक आइस्टीन ने जब तीसरे महायुद्ध में प्रयुक्त किये जाने वाले शस्त्रों के सम्बन्ध में जिज्ञासा की गयी तो उन्होंने उत्तर दिया कि तीसरे महायुद्ध के बारे में तो मैं कुछ नहीं कह सकता पर चौथा महायुद्ध पत्थरों और लाठियों से लड़ा जायेगा। दूरदर्शी वैज्ञानिकों ने आगामी महायुद्ध के जिस सभावित खतरे की ओर सफ़ेत किया है उसकी गभीरता को आज विश्व के अनेक प्रमुख व्यक्ति समझने लगे हैं। विभिन्न राष्ट्रों के पास उत्तरोत्तर बढ़ती हुई आणविक शस्त्रों की संख्या ने मानव-अस्तित्व को सन्देहास्पद बना दिया है। यदि युद्धों की यह परम्परा बन्द न हुई तथा भयकर विनाशकारी आणविक शस्त्रों के प्रयोग पर प्रतिबन्ध न लगा तो निश्चय ही मानव-सम्यता नष्ट हो जायेगी। शत-महस्र वर्षों में मनुष्य ने जो प्रगति की है वह कुछ ही क्षणों में क्षार रूप में परिणत हो जायेगी। आज का साहित्यकार भी इस विकट समस्या से विमुख नहीं है। राजस्थानी के प्रसिद्ध कवि श्री गिरधारीसिंह पडिहार का खड-काव्य 'मानखो' युद्ध की विभीषिका की ओर जन-मानस का ध्यान आकर्षित करने के लिए किया गया इसी प्रकार का सफल कवि-प्रयत्न है।

काव्य-कथा — गन्धर्व चित्रसेन अपनी पत्नी के साथ विमान में जा रहा था। उसकी पत्नी ने गाना आरम्भ किया। समक्ष सौन्दर्य की साकार प्रतिमा और उसके कल कण्ठ से निसृत मधुर सगीत की तान ने चित्रसेन को तल्लीन बना दिया।

अनायास उसने पान की पीठ सूकी प्रीर वह नीचे गालव ऋषि पर गिरी । गन्धर्व चित्रसेन से चाहे अनजान में ही यह अपराध हुआ हो पर श्रीकृष्ण ने उमे दंडित करने का निश्चय किया । चित्रसेन अपने प्राणों के भय में गव जगह शरण के लिए भागा फिरा पर किसी ने उमे शरण न दी । कोई भी श्रीकृष्ण के विरुद्ध वडा होने को तत्पर न हुआ । हार कर गन्धर्व चित्रसेन ने गंगा किनारे अग्नि-चिना में जलकर प्राण देने का निश्चय किया । पति को जलने को तत्पर देय उमकी पत्नी ने गहरा दुख और वेदना प्रकट करते हुए विधवा-जीवन की कदर्थना पर आभू वहाये । कृष्ण की वहिन और अर्जुन की पत्नी सुभद्रा ने उमके चित्राप को मुना और चित्रसेन से सारी कथा मुन उमे अभय वचन दिया । यह जान होने पर भी कि श्रीकृष्ण ही चित्रसेन को प्राण-दण्ड देने पर उनाम है, सुभद्रा जरा भी न हिचकिचायी । उसने जाकर अर्जुन को सारी घटना वनाते हुए चित्रसेन के प्राणों की रक्षा करने के लिए प्रेरित किया । आरम्भ में अर्जुन श्रीकृष्ण के विरुद्ध युद्ध के लिए सहमत न हुआ पर सुभद्रा द्वारा उत्साहित किये जाने पर वह युद्ध के लिए तैयार हो गया । दोनो ओर की सेनाएं व योद्धा एक दूसरे के सामने आ उटे । सुभद्रा भी अर्जुन के रथ पर साथ थी । युद्ध आरम्भ हुआ । वीर परस्पर भिड गये । रण-क्षेत्र रक्त-रजित हो उठा । विभिन्न प्रकार के गन्धर्वों के चलने में आम-पान का वातावरण बदलने लगा । कभी अगारे बरसते और कभी जल । अन्त में श्रीकृष्ण के तीर से अर्जुन सन्नारहित हो रथ पर गिर पडा । थोडी देर बाद होश में आने पर उसने पाशुपत शस्त्र उठाया । वह उसका प्रयोग करने ही वाना था कि समस्त सृष्टि में त्राहि-त्राहि मच गयी । नारद और गालव दोनो ऋषि दौडते हुए आये और दोनो पक्षों के बीच में स्थित हो श्रीकृष्ण व अर्जुन से मानवता की रक्षा के लिए युद्ध बन्द करने का अनुरोध किया । गालव ऋषि ने बताया कि उन्होंने चित्रसेन को क्षमा कर दिया है । श्रीकृष्ण और अर्जुन ने अपने सत्य पर रहते युद्ध बन्द कर दिया । श्रीकृष्ण ने दोनो वशों की लाज रखने और उनमें 'मानखा' जगाने का श्रेय सुभद्रा को दिया । नारद ने युद्ध में मृत लोगो के सहार पर श्रीकृष्ण को फटकारा और कडे शब्दों में युद्ध का विरोध किया । श्रीकृष्ण ने युद्ध की अनिवार्यता और आवश्यकता के सम्बन्ध में अपने तर्क प्रस्तुत किये । अन्त में तमोगुणी शक्ति का विरोध करते हुए तथा ससार के विनाशक हथियारो का समूल नाश आवश्यक बताते हुए काव्य का समाहार किया गया है ।

इस कथानक को लेकर हिन्दी में श्री माखनलाल चतुर्वेदी 'एक भारतीय आत्मा' ने "श्री कृष्णार्जुन युद्ध" नामक नाटक बहुत पहले लिखा था जो काफी लोकप्रिय हुआ । श्रीकृष्ण और अर्जुन महाभारत के मुख्य पात्रों में हैं पर महाभारत में ऐसे किसी युद्ध का उल्लेख नहीं । महाभारत में गन्धर्व चित्रसेन और गालव ऋषि का नाम कई जगह आया है पर कही भी प्रस्तुत घटना का उल्लेख नहीं । महाभारत

में चित्रमेन और गालव के सम्बन्ध में जो वर्णन मिलता है उसके आधार पर 'महाभारत की नामानुक्रमणिका' में उनके बारे में निम्न वृत्तान्त दिया गया है—

पृष्ठ ११५—

(३) चित्रसेन— एक गन्धर्व, जो सत्ताइस महायक गन्धर्वों और अप्सराओं के माय युधिष्ठिर की सभा में उपस्थित हो उनका मनोरजन करते थे (सभा० ४/३७)। ये कुवेर की सभा में भी उपस्थित होते हैं (सभा० १०/२६)। ये इन्द्र की सभा में विराजते हैं (सभा० ७/२२)। इनका अर्जुन को संगीत-विद्या की शिक्षा देना (वन० ४४/८-९)। इन्द्र के आदेश में इनका उर्वशी के पाम जाकर उसे अर्जुन को प्रसन्न करने के लिए कहना (वन० ४५/६-१३)। द्रौतवन में कौरवों के साथ इनका युद्ध और कर्ण को परास्त करना (वन० २४१ अध्याय)। दुर्योधन को बदी बनाना (वन० २४२/६)। अर्जुन द्वारा पराजित होकर इनका अपने को प्रकट कर देना (वन० २४५/४७)। इन्द्र से अर्जुन की युद्ध-कला की प्रशंसा करना (विराट० ६४/३८-४३) युधिष्ठिर के अश्वमेध यज्ञ में ये भी पधारे थे और यथावसर अपने नृत्य-गीत की कलाओं द्वारा ब्राह्मणों का मनोरजन करते थे (आश्व० ८८/३९-४०)। धृतराष्ट्र के आश्रम पर नारद जी के साथ ये भी पधारे थे (आश्रम० २९/०)।

पृष्ठ १०३

गालव— युधिष्ठिर की सभा में विराजने वाले एक ऋषि (सभा० ४/१५)। ये इन्द्र की सभा में भी बैठते हैं (सभा० ७/१०)। गुरु दक्षिणा मागने के लिए इनका गुरु विश्वामित्र से हठ करना (उद्योग० १०६/२५)। गुरु दक्षिणा के लिए आठ सौ घोड़े पाने की चिन्ता (उद्योग० १०७/३-१५)। गरुड की पीठ पर बैठकर पूर्व दिशा की ओर जाते हुए गरुड के वेग से इनका व्याकुल होना (उद्योग० ११२/५-१८)। गरुड के साथ घन के लिए ययाति के पास जाना (उद्योग० ११४/९)। ययाति कन्या माधवी को लेकर अयोध्यानरेश हर्यश्व के पास जाना (उद्योग० ११५/१८)। राजा हर्यश्व से दो सौ घोड़े शुल्क रूप में लेकर माधवी को एक पुत्र उत्पन्न करने के लिए उनके हाथ में सौपना (उद्योग० ११६/१५)। पुत्रोत्पत्ति के बाद पुन माधवी को लेकर इनका दिवोदास के पास जाना (उद्योग० ११६/२२)। दो सौ घोड़े शुल्क रूप में लेकर माधवी को दिवोदास के हाथ में एक पुत्र की उत्पत्ति के लिए देना (उद्योग० ११७/७)। पुत्रोत्पत्ति के पश्चात् वहा से माधवी को लेकर गालव का उशीनर के पास जाना और उशीनर को माधवी के गर्भ से दो पुत्र उत्पन्न करने की प्रेरणा देते हुए उनसे चार सौ घोड़े मागना (उद्योग० ११८/३-८)। गरुड की सलाह से विश्वामित्र को छ सौ घोड़े और माधवी को देकर गुरु दक्षिणा चुकाना (उद्योग० ११८/१४)। फिर एक पुत्र की उत्पत्ति के बाद माधवी को राजा ययाति को लौटाकर इनका वन को जाना (उद्योग० ११८/२४)। स्वर्ग से गिरे हुए ययाति को इनका अपने तप का आठवा

भाग देना (उद्योग० १२१/२८)। नारदजी से श्रेय के विषय में प्रश्न करना (शान्ति० २८७।५-११)। गिव महिमा के विषय में युधिष्ठिर में अपना अनुभव सुनाना (अनु० १८।५२-५८)। अगस्त्य जी के कमल की चोरी होने पर शपथ करना (अनु० ६४।३७)। महर्षि गालव विश्वामित्र जी के ब्रह्मवादी पुत्रों में से एक थे (अनु० ४।५२)। उनके पुत्र का नाम श्रृ गवान् था, जो एक महर्षि थे और जिन्होंने वृद्ध कन्या से विवाह किया था (शल्य० ५२।१४-१५)

गन्धर्व चित्रसेन और महर्षि गालव के सम्बन्ध में उपर्युक्त उद्धरण में यह स्पष्ट हो जाता है कि कृष्णार्जुन युद्ध की कल्पना महाभारत के बाद पौराणिक-काल की है। वहाँ चाहे यह आख्यान किसी भी उद्देश्य में प्रस्तुत किया गया हो पर निश्चय ही 'मानखो' के कवि ने उसे भिन्न उद्देश्य से प्रयुक्त किया है।

नामकरण — काव्य का नाम 'मानखो' है। 'मनुष्य' में राजस्थानी 'मिनख' बना है और इसी से 'मानखो' बना है जिसका अर्थ है मानवता। कवि ने प्रधानतः इसी अर्थ में 'मानखो' शब्द का प्रयोग किया है—

- (१) अधिकार मानखै रो निरणै
रण रोळा कद ताँई होसी
(२) धरती रै मिनख मानखै नै
ओजू ओसाण मिल्यो कोनी

'मानखो' शब्द का प्रयोग इज्जत के अर्थ में भी किया जाता है और कही कही कवि ने इस अर्थ में भी प्रयोग किया है—

“कुळ धरम करम सत तेज लाज,
हू मुड्या मानखो जावै है ।

काव्य-सौन्दर्य — 'मानखो' एक खड-काव्य है जो तीन सर्गों में सम्पूर्ण हुआ है। इसमें केवल एक घटना-कृष्णार्जुन युद्ध-का वर्णन है। कवि ने मगलाचरण की पुरानी परिपाटी को नहीं अपनाया है और काव्य का आरम्भ चित्रसेन के निम्न वर्णन से किया है—

इन्द्रापुर वाळो गीतकार
सुर राग रग में रीझ्योडो ।
सुख रै हीडोळै हीड रयो,
वैभव री विरखा-भीज्योडो

'मानखो' वीर रस प्रधान कृति है। सुभद्रा और अर्जुन की उक्तियाँ उत्साह पूर्ण हैं। जिस गन्धर्व चित्रसेन को शरण देने में सृष्टि की बड़ी बड़ी शक्तियाँ मुह मोड़ गयी उसी को सुभद्रा ने अभयदान देते हुए कहा —

(छ)

जे आखी दुनिया मुख मोड्यो
सकट नी भाल सकी थारो ।
तो चित्रसेन अब डर कोनी
सरणो है तनै सुभद्रा रो ॥

कवि ने युद्ध का वर्णन तो बड़ा ही मजीब किया है । कानो तक तनी हुई प्रत्यञ्चा से निकले तीक्ष्ण तीर तीव्र ध्वनि करते हुए छूटे और उनके लगने में योद्धाओं के शरीर से रक्त के प्रवाह बहने लगे:—

काना तक तरणी कवाणा स्यू
तीखै तीरा रा सग्गाटा
बळ भरिया री हुकारा मे
वै' चाल्या रगता बग्गाटा

अग्नि बाणो के चलने से आग निकलने लगी और चारो ओर की धरती अगारो से ढक गयी । जब पानी बरसाने वाला शस्त्र-मेघ-बाण चला तो धारा सार वर्षा होने लगी —

ज्वाला धधकाता अगन अस्त्र
अवनी ढक ज्यावै अगारा
घन घटा ऊमडै मेघवाण
जळ भडै, पडै जाडी धारा

ऐसा प्रतीत होता था मानो वीर यमराज की डाढो पर शकर की भाति ताण्डव नृत्य कर रहे हो —

जम री जाडा पर नाच-नाच
शकर सो ताडव सूर करै

युद्ध की भूमि लाशो से भर गयी और रक्त-स्नात हो उठी । ऐसा मालूम पडता था मानो अत्यधिक क्रोध से नेत्रो की लालिमा उभर आयी हो और कसूँमल रग जैसी लाल बन गयी हो:—

लोथा पर लोथा पड पटगी
भोमी लोही मे भीज्योडी
मिळगी है रग कसूँमल मे
ज्यू आख खार स्यूँ खीज्योडी

धीकृष्ण के तीर से अर्जुन कुछ क्षणो के लिए मूर्च्छित हो गया । जब होश में आया तो उसके नेत्र क्रोध से तमतमा उठे । उसने अपना पाशुपत सम्हाला । कवि ने उसका ब्रह्माण्ड-व्यापी प्रभाव बड़े ही ओजस्वी शब्दो में अंकित किया है:

सळ पडग्यो ब्रम्हा रै लिनाड
 भू भूतनाथ री वळखाई ।
 उगामुगै इद रो तन काप्पो
 गुर नर री सगत्या थर्राई ॥

कवि ने वीर के साथ श्रृंगार रस का भी मुन्दर वर्णन किया है । मौन्दर्य के अकन मे उसकी दृष्टि सूक्ष्म और कोमल बन गयी है । चित्रसेन की पत्नी के सौन्दर्य का चित्र रथूल की अपेक्षा सूक्ष्म अधिक है —

घर मे धरण रुडी रती जिमी
 फूला रै काटै तुल ज्यावै ।
 वो रूप पलक पलका लाग्या
 नैणा प्राणा मे घुळ ज्यावै ॥

यदि ऐसा सौन्दर्य समक्ष हो और वह अपने मधुर कठ मे प्रेम पूर्ण राग गाने लगे तो कौन ऐसा होगा जो मदमत्त न हो जाय । मानव-स्वभाव के उम मत्य को व्यक्त करते हुए कवि ने लिखा है —

नारी रो रूप कठ मीठा
 नैणा रो नेव रळ्या सागै ।
 बादळ सो उमड उलड ज्यावै,
 भीतर रो नर भीजण लागे ॥

शरीर पर कलियों की कोमलता लिये, ज्योत्स्ना के समान धवल, अन्धकार मयी निराशा मे किरण मयी आशा की तरह सुभद्रा के स्वरूप का चित्रण भी आकर्षक है.—

भिळमिळी चानणी रो पळको,
 ज्यू आस उजास किरण आई ।
 फूला री मीठी मास जिसी,
 तन पर कळिया री कवळाई ॥

यद्यपि काव्य मे वियोग दिखाया नहीं गया है पर उसकी सभावना से चित्रसेन की पत्नी को जो मार्मिक वेदना होती है वह हृदय-स्पर्शी है । चित्रसेन को चित्ता मे जलने के लिए तत्पर देख उसकी पत्नी अपने भावी वियोग की कल्पना करते हुए कहती है—

वादळ गाजै, भिरमिर छाटा,
 बीजळ कडकै दिल घडकाती ।
 काजळ काळी रानडल्या मे,
 हू जा लागू कुण री न्यती ॥

कही कही अन्तर्द्वन्द्व बडा ही स्वाभाविक और मनोवैज्ञानिक है । युद्ध के क्षेत्र में सुभद्रा भी अर्जुन के साथ उसके रथ पर सवार है । युद्ध आरम्भ होने से पूर्व वह सोचती है कि दो प्रान्तों के बीच डग रण में वह अब किसकी मंगल-कामना करे । एक ओर उसका भाई है तो दूसरी ओर उसका पति । वह अनमज्ज में पड जाती है कि किसकी मंगल-कामना करे --

वै भाई, सोहाग अठीनी,
कुण री सँर मनाऊ ।
दोना कानी खड्यो अमगळ
मगळ कुण री गाऊ ॥

आज का युग नर-नारी की समानता का है । दोनों का व्यवित्तत्व मिलकर ही एक पूर्ण इकाई बनता है । यदि पुरुष को अपने पुरुषार्थ का गर्व है तो उसे यह न भूलना चाहिए कि उसका उद्गम नारी ही है —

'रळ आधो आध अग पूरो,
जद मिनख लुगाई कुण कम है ।
जे नर है नर पुरुषार्थ री,
तो नारी उणरो उद्गम है ॥

यो तो नारी संसार में जननी का रूप लिये पालन का ही कार्य करती है पर आदश्यकता पडने पर वही हाथ में शस्त्र लेकर चडी बन जाती है और मानव-धर्म व मर्यादा की रक्षा करती है —

जग री जणनी पाळन वाळी,
कोपँ तो करडी काळी है ।
सुभ धरम करम मरजादा री,
नारी नर री खवाळी है ॥

नारी की महत्ता का गुणगान करते हुए कवि ने शकुन्तला और सावित्री को उदाहरण रूप में प्रस्तुत किया है । एक ने भरत जैसे वीर को जन्म दिया और दूसरी ने भयकर मृत्यु के मुख से अपने पति को वापस निकाल लिया:—

घण कवळी जकी सकुनळ ही,
उण भूप भरत सो वणा दियो ।
अ'टी सगती सावित्री री,
विकराळ काळ ने जेर कियो ॥

'मानखो' में अलकारों का प्रयोग स्वाभाविक और सुन्दर रूप में हुआ है । अलकारों ने भावों की स्पष्टता में सहायता पहुँचायी है और पाठक को विम्ब-ग्रहण में मदद दी है । अधिकांशतः उपमा और उत्प्रेक्षा अलकार ही आये हैं । चित्रसेन की पत्नी के निम्न कथन में उपमा दर्शनीय है —

वागों मे पकज पाखडल्या,
 आखडल्या मी गुन ज्यावैली ।
 ह हिरणी ज्यू हर कन् पीव,
 नी भोर गुनावी भावैली ॥

चित्रसेन को अभय-दान देने पर उमकी पत्नी ने सुभद्रा का चरण-स्पर्श किया । इसकी कवि ने जो उत्प्रेक्षा की है वह अनूठी है —

जाणै करुणा री तैर ढळक,
 सगती रै चरणा पर दुळगी ।

अनुप्रास यो तो जगह जगह है पर कही कही उक्ति बड़ी ही चमत्कार पूर्ण बन गयी है:—

का'नै री कीरत पर कोभी, काळव लाग रही है ।

‘मानखो’ राजस्थानी भाषा में है । कवि का भाषा पर पूर्ण अधिकार है अतः उसकी भाषा प्रसाद गुण सम्पन्न और प्रवाहमयी है । भाषा की स्वाभाविकता के लिए सुभद्रा का निम्न कथन उदाहरण रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है—

वीरा थे पकड अरगूती नै,
 इतरा तो अ वळा जावो मत ।
 कर बात वावळा रै दाई,
 ग्यानेसर गू ग खिडावो मत ॥

भाषा में ध्वनि का प्रयोग भी मिलता है । कृष्ण द्वारा अपनी वीरता के सम्बन्ध में गर्वोक्ति करने पर सुभद्रा उन पर व्यंग्य करती है और जरासिन्धु के समक्ष युद्ध में से भागने की घटना का संकेत करते हुए कहती है—

‘आखो जग धानै जाणै है,
 क्यू भलो नाव रणछोड पड्यो

मुहावरो के प्रयोग ने भाषा को रोचक और समृद्ध बनाया है । राजस्थानी का एक प्रसिद्ध मुहावरा है ‘लड दवना’ जिसका अर्थ है प्रभावित होना । कवि ने इस मुहावरे का सुन्दर प्रयोग किया है—

मोटो है भूप जवर जोवो,
 धूजै है दुनिया नाव लिया ।
 लूँठा रा लड दवियोडा है,
 ओडी रै आडा अडै किया ॥

सन्देश:— युद्ध मानव की शाश्वत समस्या है । मानव ने बार बार शान्ति का प्रयत्न किया पर बराबर उसे युद्ध में रत होना पडा । युद्ध अपकर्म है, दुष्कृत्य है, बुरा काम है पर एक ऐसी स्थिति भी आजाती है जब न चाहते हुए भी लडना पडता है । यदि खेत में जवरदस्ती घुसकर फसल को नुकसान पहुंचाने वाले पशु

आवाज से रोकने पर नहीं रुकते तो खेत की रक्षा के लिए नाठी का प्रयोग आवश्यक हो जाता है ताकि समझाने पर न मानने वाले को शक्ति के प्रयोग में ममभाया जाय । शक्ति की भाषा को यह ससार जल्दी और मरलता से ममभता है —

रण माडो करम जगत जाणी,
पण हद रै नाकै भालीजै ।
डागर नी घिरै दकाल्या जद,
नाठ्या ही खेत खाळीजै ॥

नारद को इसी बात का दुःख है कि मानव को अपने अधिकारों की रक्षा के लिए युद्ध करना पडता है जो मानव जाति के माथे पर एक बडा भारी कलक है —

अधिकार मानखै रो निरराँ,
रण रोळा कद ताई होसी ।
आ काळख ओ अज्ञान पाप,
कद मिनख निलाडी स्यू घोसी ॥

इसके उत्तर में कृष्ण का यह तर्क है कि जब तक बलवान अपनी शक्ति के मद में चूर होकर दूसरों का धन, धरती आदि छीनने का प्रयत्न करता रहेगा, तब तक युद्ध बन्द न होंगे —

लूठा लूटी चावै धरती,
जुद्धा रो अत किया आवै ।

इसीलिए वे न्याय और धर्म के लिए युद्ध का समर्थन ही नहीं करते बल्कि उसे परम पुण्य और परमार्थ मानते हैं —

रण जद-जद लोक धर्म कारण
तो परम पुत्र परमारथ है ।
मरजाद मानखो राखण नै
नर पूरा रो पुरसारथ है ॥

सुभद्रा भी महाभारत की और सकेत करते हुए युद्ध की शाश्वतता स्वीकार करती है । वह अर्जुन को कृष्ण के विरुद्ध युद्ध के लिए प्रेरित व तत्पर करते हुए कहती है —

अकरम ही मेटण नै, पारथ,
था वो रगत खिडायो ।
मिनख धरम जुग-जुग जूस्यो है,
जद जद अकरम आयो ॥

लेकिन-वर्तमान काल में भयकर सहार कारी शस्त्रों का नियंत्रण ऐसे लोगों के हाथों में आगया है जो उसके सर्वथा अयोग्य हैं । कवि ने इसी को ध्यान में रखते हुए नारद के मुख से कहलाया है —

जिण रो ह्वटो ही वत कोनी,
उण रै कावू मे महाकाळ ।
जटुपत थे आप चिचार करो,
ओ जोर ढळौलो किसी ढाळ ॥

पता नहीं, कब ऐसे लोगो का मानसिक मन्नुदन विगड जाय और उनकी
मूर्खता का विनाशकारी परिणाम ममस्त मानवता को भोगना पड जाय —

कुण जाणै मिनख अगूतो वण
कद आपो भूलै, कोप करै ।
जाणै कद जगत मिटा देवै
धक्कै स्यू धरती लोप करै ॥

यह सत्य है कि बीच में कवि ने मानव अधिकारों की रक्षा तथा अत्याचार और अत्याचार का विरोध करने के लिए युद्ध की अनिवार्यता बनायी है और दुर्बलता के जीवन को अभिशप्त माना है पर इसमें कोई मन्देह नहीं कि अन्न में उसने युद्ध का स्पष्ट और दृढ़ शब्दों में विरोध किया है । अगर विश्व-युद्ध हुआ तो निश्चय ही उसमें भयकर से भयकर शस्त्रों का प्रयोग होगा और उनमें ममस्त मानवता के विनाश का खतरा पैदा हो जायगा । अतः केवल राजनैतिक कारणों से ही नहीं बल्कि नैतिक कारणों से भी ऐसे किसी महायुद्ध का खुलकर और कटे शब्दों में विरोध किया जाना चाहिए । इसी लिए अपने ग्रन्थ का समाहार करते हुए कवि ने बड़े ही मार्मिक शब्दों में कहा है —

इण तरिया जुग-जुग जग छीज्यो,
जुद्धा स्यू त्राण मिल्यो कोनी ।
धरती रै मिनख मानखै नै,
ओजू ओसाण मिल्यो कोनी ॥

‘मानखो’ की रचना आज के ऐतिहासिक क्षणों में हुई है जबकि मानवता की रक्षा के लिए नये कदम उठाये जा रहे हैं । एक ओर कुछ दानवी शक्तियाँ आज भी युद्ध का समर्थन करते हुए विश्व को सम्पूर्ण विनाश की ओर धकेलने का प्रयत्न कर रही हैं तो दूसरी ओर मानवता को आधार बनाने वाले अनेक राष्ट्र मदा के लिए युद्धों की परम्परा मिटाने की चेष्टा कर रहे हैं । ‘मानखो’ काव्य का ऐसे विकट समय में सभी सुधी जन स्वागत करेंगे और सहृदय जन उसका रसास्वादन कर आनन्द लाभ करेंगे, ऐसी आशा है ।

चन्द्रदान चारण

एम ए, साहित्य-रत्न

प्रिंसिपल, भारतीय विद्या मन्दिर
वीकानेर

२६ जनवरी १९६४

प्रकाशक्रीय

श्री गिरधारीसिंहजी पण्डित राजस्थान और राजस्थानी के प्रसिद्ध कवि हैं। इनकी कई कविताएं मैंने विभिन्न अवसरों पर सुनी। उनमें जो जोग और उत्साह है वह नवीन भारत के निर्माण में बहुत सहायक हो सकता है। इसी भावना को ध्यान में रख कर यह निश्चय किया गया कि कवि का "मानसो" नामक खंड काव्य श्री जगजीवन सर्वोदय आश्रम ट्रस्ट की ओर से प्रकाशित किया जाय। ट्रस्ट की ओर से प्रकाशित होने वाले ग्रंथों में यह प्रथम है। भविष्य में हमारे जीवन, समाज और राष्ट्र को उन्नति की ओर ले जाने वाले और भी ग्रंथ प्रकाशित किये जायेंगे। आशा है सहृदयजन इस रचना का समुचित समादर कर हमारे तथा कवि के उत्साह को बढ़ायेंगे।

पन्नालाल बारूपाल

एम. पी.

अध्यक्ष

श्री जगजीवन सर्वोदय आश्रम ट्रस्ट
कोलायत, बीकानेर

दिनांक २६-१-६४



म्हारी बात

वीरा रो जस गावणो राजस्थान रे कवि रो परम्परा स्यू सभाव रयो है । वीरता रो भाव जीवतो जागतो राखण रै धरम नै इण धरती रो कवि कदे नड भूल्यो । हू म्हारी रचनावा मे सदा उण लीक ने निभावण रो चेष्टा करतो रयो हू अर इण खड-काव्य मे भी उणी धरम नै पाळणो चायो है ।

जुद्ध मानखै रै माथे रो कळक है, मोटो पाप है पण धरम, धरती, न्याव अर सत् री रुखाळी सारू मिनख इण पाप नै पुत्र मान'र सदा करतो आयो अर आज भी करे है । जको देश अथवा जात ओटी विरिया मे इण पुत्र ने पुरो करण रो सामर्थ्य नही राखै उण नै इण धरती पर कोई ठोड नही है, जीणै रो हक नही है ।

सगती री भगती करै जकी
दुनिया नी दुबळा जोगी है ॥

जके मिनखा नै आज भी धरती आदर दे रयी है अर सूरवीरा रै नाम स्यू याद करै वा आपरो वीर धरम पाळण नै, मानखो राखण नै किती भळ भाली, उण रो लेखो नही लाग सकै ।

जद भीसम सो दादो विंध्यो, मारयो है करण जिस्यो भाई ।

लाखा रै लोया डूवोडो, हू मिनख मानखै अरखाई ॥

धरती रा मोटा मिनख हजार उप ग्र करता रया पण मानखै री आ अरखाई, मिनख रै रगत मे डूवण री वेवती, मिनख रै सामने सदा रयी अर आज भी है ।

“मानखो” म्हारी दूसरी पोथी है । रचना किसीक बणी इणरो निरणै तो विद्वान् पढारा ही करसी । हू तो इतोयी कैवणो चाऊ कै मा सारदा री क्रिया स्यू म्हारी हीणी मानीजी मायड भासा (देश रै सघविधान मे जकी नै दूसरी भामावा मागै ठोड नही मिली) रो अ आटी टूटी ओळया लिख्या जे कुई सेवा हर्डे हुवै तो म्हारो माटो भाग है ।

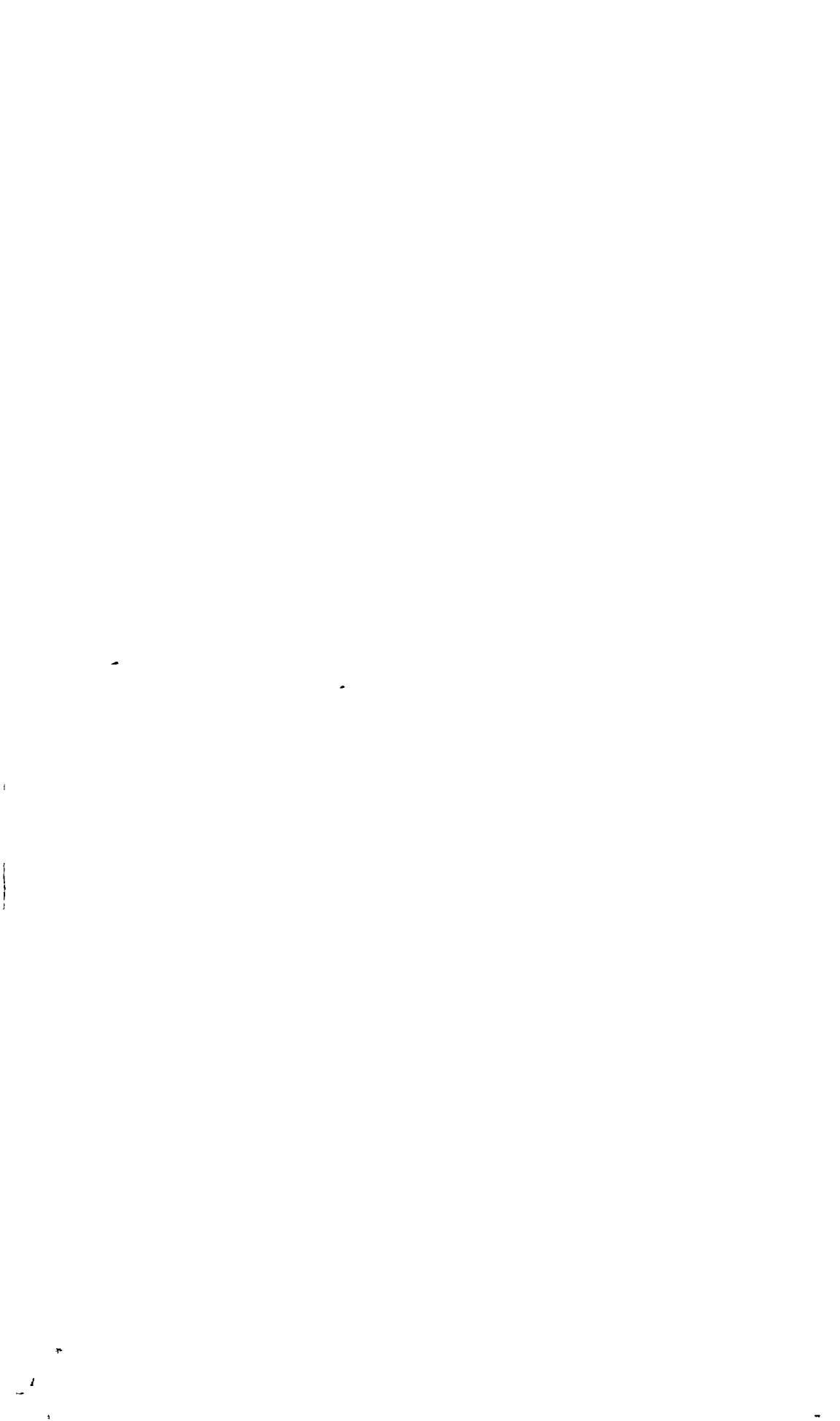
आदरजोग विद्वान् गुरुजन जका सदा माईत पणै रो हाथ सिर राख्यो, सर्वोदय साहित्य संस्थान रा साथी अर वै भायला जका सदा म्हारो मन बधावता रया, सगळारो घणो आभारी हू ।

छेकड मे श्री जगजीवण सर्वोदय आश्रम ट्रस्ट अर उण रा अध्यक्ष भाई श्री पन्नालालजी वारूपाल अमे० पी० रो मोटो आभार माथै है जका इण पोथी ने छपाण रो सगळो भार साभ लियो

सर्वोदय साहित्य संस्थान
बीकानेर

२६-१-१९६४

गिरधारीसिंह पड़हार



: १ :

इंद्रापुर वालों गीतकार,
सुर राग रंग मे रीझयोड़ो ।
सुख रं हींडोलं हींड र्यो,
वंभव री विरखा-भीष्योड़ो ॥

गीतां में गोट कल्पना रा,
नेरां मे सुपना भलकं हा ।
जाएँ दो अमी भर्या प्याला,
जीवण-जोती स्युं पलकं हा ॥

घर मे धरण छड़ी रती जिती,
फूलां रं कांटे तुल-ज्यावं ।
बो रूप पलक पलकां लाग्यां,
नेरां प्राणां मे घुल-ज्यावं ॥

भेला सगला सुख सुरगां रा,
घरणां ने श्राय चूमता हा ।
ज्युं एक फूल री मै'क उडी,
जोगइदे भंवर भूमता हा ॥

जिण रं सुरवाली तै'रां पर,
 अमरां रा जीव तलक ज्यावै ।
 मन मोण्या घण रूपात्या रा,
 नंगां मे हियां छलक ज्यावै ॥

वै छंद कठ रो वो मिठास,
 भार्वा मे ग्यान भटक ज्यावै ।
 कितरी रभा उरवसियां री,
 उण मुखईं श्राख अटकज्यावै ॥

इमरत वरसं जिण रं गीतां,
 मित्तर है जिण रो देवराज ।
 ओईं दिन अमरां री वभूत,
 घरती पर आईं भाज श्राज ॥

ओ चित्रसैन गंधर्व राज,
 तीनू लोकां नं वण्यो भार ।
 चढ़ रयो चिता पर जीवतडो,
 वेवां रो प्यारो कलाकार ॥

ज्वाला री सरण फिड़कलै ज्यूं,
 जीवण री जोत बुभावण नै ।
 गंगा तट लकड़ी भैली कर,
 बैठण लाग्यो बल जावण नै ॥

भर-भर आंसू री धार भरै,
 सामे उभी विलखै राणी' ।
 "प्रीतम अं'डो दिन आवैलो,
 मा सुपनं मे हों नी जाणी ॥

जीवण रा साथी गुण मोडी,
 फुण सारें जावो छोड़ इया ।
 साजन सूकूली सिसक-सिसक ।
 तरवर री काटी डाल् जियां ॥

थे मिटो अगन री लपटां में,
 हिवड़ें री इमरत बें ज्यावं ।
 घाकी सा-सां निसकारां मे-
 हों, हेत तड़फतो रें' ज्यावं ॥

ढलकं काजल लीकां, बिदली,
 माथें री मांग मिटे, मारु ।
 सोला सिएगार बिखर ज्यासी,
 तन तार सजंला फुण सारु ॥

कलु भलु नी भलुं कालुं मे,
 अण चायोड़ो वंराण दुखें ।
 जीवण अं'ड़ो हें पीव बिना,
 जीवतडों जियां मसाण धुखें ॥

नेणां री नीर ढलुं साजन,
 छेडो जीवण री जोवण में ।
 मुखड़ो मुड़ रवे जमारें रो,
 बिखर्योड़ा मोती पोवण में ॥

रें ज्यासी गुंज, बिखर ज्यासी,
 -सैं पीत वायरें रें भीलां ।
 हिवड़ें मे घुटसी प्रीतइली,
 प्रीतम बिन पाट कठं खोलां ॥

सूवां नी लपट भतूलां मे,
कनियां नी पाया कुमनावे ।
सायीला रगाम विरे' माने,
विषवा रो तन तिल-तिल राये ।

वावत गाजे, भिरगिर द्याटा,
वीजल फडके विन भडकाती ।
काजल काली रातज्यां मे,
हं जा लागूं गुण गी द्याती ॥

सीयाले रा ठडा भोला,
पलगा दुख दूणो जागीलो, ।
भीतर स्यूं निसकारा उमडे,
तन तरवर दावो लागेलो ॥

आभे वाली लीली घादर,
हीरी ज्यूं तारा निखरेला ।
भ्हारी जाजम नित नैण डुलै,
पलकां रा मोती विखरेला ॥

हिवडे मे प्रीत जोत वालै,
दिवले री बाती बुझ जयासी ।
बेरी ज्यूं चांव बुरो लागे,
गोरोडी रातां अणखासी ॥

बापां मे पकज पांखडल्यां,
आंखडल्यां सी खुल जयावेली ।
हं हिरणी ज्यूं हर करू पीव,
नी भोर गुलाबी भावेली ॥

रंग भीणी कलियां खुले, भवर-
-भूमेता, हू मुरभाऊ ली ।
हिवडै रा हार हियो फाटै,
सिर पटक-पटक मर ज्याऊली ॥

मुख मोडो मोवन प्राज इस्यो,
होवो नैणा स्यू नित न्यारा ।
घण रं घण कवलं कालजिये,
इतरी नी पीड़ भूलै प्यारा ॥

पल पलकां ओटै कुमलाऊ,
छोड़ूं जीवण रो साथ किया ?
श्रेकलड़ी कुंकर जीऊ ली,
हिवडै मे इतरी लाय लियां ॥

कथा कामण रो मन कवली,
अ वलो दुनिया रो धारो है ।
ताता भोला ओलो कोनी,
विधवा रो किसो जमारो है !

था विछड्यां साजन कुरज जियां
हूं आखी ऊमर कुरलाऊं ।
इए स्यूं तो आछो राख रलै,
वाया मे भेली बल ज्याऊं ॥

धीत्यां हीं घात विछोवै गी,
हिवडै मे होली जागै है ।
मिट ज्यावां गल्लो मिला तामै,
घो मरणो मिठो लागै है ॥

दो जीव प्रीत मे भूत्गो,
 या भनी भित्या भेना जावे ।
 पण जनरो मेटे दिना चात,
 पिच्छतावो पीव इतो पावे ॥

छोटीसी भूल चणो मारण,
 कर मान्यो गिमरघ पाप इतो ।
 दुनियां रघू न्याव द्यो फोनी,
 साजन रं'सी सताप इतो ॥

जीवण फितरो वणग्यो छोटी,
 लपटां री ओट लुकें काया ।
 लोरी मे प्रीत पालण री,
 गिराती रा सांस पिया आया ॥

अण चेत हेत वाली सुपनो,
 इण विघ दूटलो कद जाणी" ।
 कं' इतो', घणी री छती मे-
 -माथो दे सिसक उठी राणी ।

अ'डी बिलखें गायक घरणी,
 छ्यं पलका गल वावल ढलुग्यो ।
 नैणा रो, गालां होटा रो,
 हिपलू री बिदली रंग रलुग्यो ।

करणा भरगी आखें वन में,
 गंगा रै गोरै पाणी मे ।
 रूखां री पाती-पाती मे,
 पख्यां री कंधली बणी मे ॥

अरण जाणी एक उदासी सी,
वायरिये री लै'रां घुलगी ।
वा पीड़ कलपतें प्राणा री
छलकी जड़ चेतन पर ढुलगी ॥

धरणी रै हरियलु आंगणिये,
सूनी सी सिसक बिछी घायल ।
जद एक अचाण चकी भूणकी,
नारी रै पगलां री पायल ॥

भिलमिली चानणी रो पलको,
ज्यूं आस उजास किरण आई ।
फूलां री मीठी सांस जिसी,
तन पर कलिया री कंवलाई ॥

पूनम री किरणा घोल्योड़ी,
कुंकूं भलकै उणियारै मे ।
जाणै जीवण री जोत जगै,
केसा रै कालु अंधारै में ॥

नेणा मे माय जिसी ममता,
दीठी स्यू दोस मिटाती सी ।
जगताप रुखाली जणनी ज्यू,
पलका पल्लों श्रोटाती सी ॥

बोली वारणी मे नेव घोल",
"हू घोल सुण्या इण भुरती रा ।
घण कूकै कुरज जियां यारी,
क्यूं जोतो विता सटै वीरा ॥

के दोम कियो तं ? कुण लूँठो,
धीगारुँ मेठो चावै है ।
कुण घरमराज री घरती नै,
हित्या कर याप लगवै है ॥

जीवरण री घरम जगत जाणै,
दिन दुल सुख रा खाटा मोला ।
वो फारण किस्यो, फायरां ज्यू,
तूं आतम घात करै भोला ?

पयू मोत अकाल मर्यो चावै,
तन नाख अगन मे राख करै ।
ओ कलंक पाडुवा नै लागै,
जे इण घरती पर इयां मरै ॥

अँड़ी कुण जवरो जलस्यो है ?
कुंकर मेठै जोरामरदी ?
वा भूल किमी है छोटी सी,
मरएँ जितरी मोटी करदी ॥

ओ घरम घाम गगा री तट,
है पुत्र परव री आज घडी ।
इन्याव करै कुण अपजोरो,
अण चींती ओडी किसी अड़ी ॥

होवैलो अधरम कियां अठे,
घरती है घरम रूखालां री ।
सगती नै दुनियां जाणै है,
कँड़ी करणी कुंताला री ॥

अण हूतो तने दुखायो कुण,
कुंकर ओ बीखो आय पड्यो ?
तू निरभं वात वता, बुझै-
-पारथ रो आघो अ ग खड्यो"

इतरो कं' मौन हुई राणी,
गधर्व नार नर निवण कियो ।
नैणां मे भलकं दया मया,
तिर भुका सुभद्रा माण दियो ।

गधर्व आंख नं पूंछ कयो-
- 'हूं चित्रसैन गायक राणी,
सुख रं सुपना मे डूब्योडो,
दुख वाली दुनिया अण जाणी ।

वापरिये री लै'रां विमाण,
गिगना में तिरतो जावै हो ।
आ घरणी छेड़्यो एक गीत,
हूं सुर मे तार मिलावै हो ॥

वाणी रं उहत्तै भावां मे,
उलझ्योडो सुघ-बुघ वीसरग्यो,
मन मे, नैणा मे, काया में,
कण-कण मे एक नसो भरग्यो ॥

नारी रो रूप कठ थोटा,
नैणा रो नेव रग्यां रंग
बादल तो उमट रग्यां रंग
भीतर रो नर रग्यां रंग

आणद नी छोलां गर्म हियो,
जद ग्यान तोष सो हो जघाव ।
माया सी मीठी घाघ्यां मे,
लोर्यां मे चेतन सो जघाव ॥

अँडो ही नौद निमाणी मे,
हं पीक पान रो थूरु दियो ।
वो पड्यो रिसी गालव ऊपर,
आ भूल हूई, ओ पाप कियो ॥

अपराध इतो ही, अण जाणै,
बरागयो जीवण रै घात जिस्यो ।
तपसी री सुणी पुकार जको,
हूणी रै लवै हाथ जिस्यो ॥

उण सिमरथ न्याव कियो अँडो,
हिवडै मे लाय लगावै है ।
आ चूक मावडी वंड इतो,
मारण नं दौड्यो आवै है ॥

हैं हलुको हीणो घरणो हुयो,
तीनूं लोकां मे भटक लियो ।
कितरी ही पोलां दुख डोल्पों,
कोई सबल नो अभं कियो ॥

माता थारै नेडो नातो,
कंताई हियो असूजै है ।
ओ जको असूभो, पांडु कुल,
पारथ स्यूं नहीं ससूभै है ॥

मोटो है भूप जवर जोघो,
घूँ है दुनियां नांव लियां ।
लूठा रा लड दवियोडा है,
ओडी रँ आहा अड़ै कियां ॥

मत पूछ मावड़ी, ' बौ कुण है ?
सुणता हीं पग पाछा पड़सी ।
पोरस रा पा'ड भुकै जिण नँ,
अबला रो बल काँई अड़सी ॥

छेडो दे दीनो छत्र-पत्यां,
हलका होग्या तिरकै सिरसा ।
इर स्यूँ मद मरै महिषा रा,
नार्यां रँ बस रा खेल किसा ॥

मंगतै ज्यूँ सरणो मांग-मांग,
मोटा दरवाजा देख लिया ।
अपमान सयो है अण तोल्यो,
कितरा ही विस रा घूँट पिया ॥

बाकी नी रही हियो हार्यो,
मसूता मेटी है जीवण री ।
माता अब अर्भ नहीं मांगू,
सगती नी छारो पीवण री ॥

जीवण री भीख घणी मांगी,
आसा मिटगी मन ढलायो है;
सरणो मागण स्यूँ मरण भलो,
घर घरम मिट्यो बस गलग्यो है ॥

काया रो मोह कितो माडो,
 भरग्यो है हियो गित्तानी म्यू ।
 जग बीघ्यो घणो जीवडं नं,
 नाकारा वाली वाणी र्यू ॥

पर हातां तीसा तीर सह,
 वीधाऊ वर्युं इण काया नं ।
 आतम रा बघण विडका दूं,
 मेटू माटी री माया नं ॥

अपमान हुयो, इन्याव हुवं,
 बली रं वकरं री ढाल मरु ।
 इण स्युं तो आछो, भार जिस्वो,
 ओ तन आपेई बाल मरुं ॥

धरती रं घूडं रलं राख,
 कण-कण स्युं न्याव पुकारेली ।
 आ समराटां रं राज धरम-
 -नं, जुगा-जुगा विरकारं ली ॥

सबला नं एक चुनौती है,
 कालख भूपालां रं बल री ।
 राणां मा आतम घात नहीं,
 आ अणन समाधी डुरबल री" ॥

आं नैणां चरण घणा ताक्यां,
 मरणै स्युं बत्तो कर दीनो ।
 अरु चित्त जगानी चोखी है,
 दुनियां तो घणो सता लीनो ॥

धर घजियां दिघो मानखें नें
 मन भरगो पो-पी पिच्छतावो ।
 हें गरगो मरगो कूत लियो,
 महाराणी पाछा मुड ज्यावो ॥

कै, गायक हुयो गलगलो सो,
 पलका भुक पीठ लुकाव ही ।
 नैगा रें डव-डव डाभर मे,
 दुख घुल्यो निरासा न्हाव ही ॥

जद कयो सुभद्रा- 'तू गायक,
 अपमान अरोसो घरगो सयो ।
 हिवडै मे जै'र इतो व्यापो,
 जीवण री लोप लकीर रयो ॥

हैं जाण लियो रें आसा रें,
 दिवलें नें बुभा खड्यो है तू ।
 मरगें स्यू पैली मिटरगें री,
 अण ओपी आय अड्यो है तूं ॥

पण कुण वो अँडो इच्याई ?
 मारण सो मोटो पण रोप्यो ।
 बल् स्यू अपकार करेँ छधो,
 डुरबल् पर देव जिघा कोप्यो ॥

सगती रें मद आघो बणग्यो,
 अदलें मारण पर चालें हे ।
 जीवण री कूत इती कमती,
 ठोकर स्यू मिनख उट्टालें है ॥

अपराध इतो, करडी घुमहया,
 त्रा वात सुण्यां हीं गीम उठें ।
 मत कं' गायक नडो नातो,
 मन वुर्त काल्जं टीस उठें ॥

सिर राज कुलां रं राज घरम,
 नी मानं अघरम र्यूं नातो,
 परतक ओ पाप तयं कुंकर,
 श्री'डो अण हूतो अण तातो ॥

नी पार पडे कुंतालां स्पू,
 इतरो घण सिमरथ कुण प्रायो ?
 मा'भारत जिसें अलूभं नै,
 पांडु रं पूतां सुलभायो ॥

हूं कुंकर मानू हयनापुर,
 डर र्यूं सिर नीचो कर लेवं ।
 वं सो-सो कैरू काल् जिस्व्या,
 कुतालो एक खपा देवं ॥

भीसम सा अजर सुमेर डिग्या,
 बाणा र्यूं वज्जर दूद्या है ।
 तेजस्वी अर्जे करण सिरसा,
 पारथ रं हाथां वूद्या है ॥

बलदाऊ किसण जिसा भाई,
 आखी अवनो रा थभ जियां ।
 पापां नै परलू रा बादल,
 घरती पर रं'सी कस कियां ॥

भारत मे श्रींड़ा भूप खड्या,
जद लीक धरम री कुण लोपे ।
श्रोकात किस अपजोरै री,
अधरम पर अड़ियो पग रोपे ॥

बल कुंतालां रो जवुआं रो,
चाबं इद्रासण उलटावै ।
पांडु रे कुल री बहू अडे,
जम रा पग पाछा पड़ ज्यावै ॥

तूं दुरवल नारी मत जाणे
सबल पारथ री धरणी नै,
अबला मत कै' रे चित्रसेन,
अभिमन्युं वाली जणनी नै ॥

गंधर्व लोक रा बासी, तूं-
-भोलप मे हीं अणखावै है ।
भारत मे श्रींड़ी नार्यां है,
पेटां मे सिघ पढावै है ॥

घण कंवली जकी सकुतल सी,
उण भूप भरत सो वणा दियो ।
श्रींड़ी सगती सावित्री री,
विकराल काल ने जेर कियो ॥

सीता सी सतियां रोह्यां मे,
नर खड्या करे लव कुस सिरसा ।
नार्यां रे बल ह्यूं सघं नहीं,
गंधर्व राज बै करम किसा ?

दुरगा गाजं जद वंत मिटै,
 वो वल नी मेस महेमा मे ।
 दुरियोधन भूप जिमा लुकाया,
 द्रोपद रं छुरलै केसा मे ॥

नारी निरमल है भगती ती,
 वल इतो जूभलै जगती स्यू ।
 धरती रा मुलक वरुं विगड़े,
 मातावां वाली सगती स्यूं ॥

जग री जलानी पालण वाली,
 कोपै तो करड़ी काली है ।
 सुभ धरम करम मरजादा री,
 नारी नर री हलवाली है ॥

दे रही आसरो जीवण नै,
 हांचल रं सारं पनपावै ।
 वा सगती जे मुख मोड़ै तो,
 कौं गायक जगत कठै जावै ?

रल आघो आघ अंग पूरो,
 जद मिनख लुगाई कुण कम है ।
 जे नर है नद पुरसारथ रो,
 तो नारी उणरो उद्गम है ॥

तूं कही मावड़ी, दुख डाल्यो,
 जद कियां सुभद्रा मुड ज्यावै ।
 मावां री जात अजली है,
 आ कालख नहीं सही जावै ॥

∴ मानखो

भ्रणदोस्त दुखाये दुरवळ री,
म्हारी घरती जीवण हाणी ।
अं२डे ने सरण नहीं देऊ,
हं पांझू रं कुळ री राणी ॥

तो सासण रो तप न्याव मिटं,
मावां रो मुखडो लाजं लो ।
जे हखवाळा ही सत हारं,
जद मिनख सांस कूंकर लं लो ॥

चावं, चढ आवं देव घणी,
कोप्यो कोई नरपत मोटो ।
आ खरी जाण, इण भोम नहीं,
होवंलो करम इसो खोटो ॥

जे आखी दुनियां मुख मोडचो,
संकट नीं भाल सकी थारो ।
तो चित्रसेन अब डर कोनी,
सरणो है तनं सुभद्रा रो ॥

सो आयो भार भालस्यूं हूं ,
ओ संकट पाझू कुल पर है ।
कुंताळां रं घर मे मारं,
देखूंली कुण धरणी-घर है ॥

इमरत सी बाणी राणी री,
मुखडं री ओप उजास जिसी ।
पलकां रे पळकं मे बिलरं,
सीतव किरणां बिसषास जिसी ॥

गायक रँ मुख दुख छयां जकी,
 लुकती सी लागं उरती मी ।
 नैणा मे नीर निरासा रो,
 आसा गागर मे भरती सी ॥

घण विम्भल सी गंधर्व घरण,
 राणी रँ प्रागं आ लुळगी ।
 जाणं करुणा रो लैर डळक,
 सगती रँ चरणा पर डुळगी ॥

हाथाऊं उठा सुमद्रा जद,
 सा'रँ ले ढाढस देवं ही ।
 ज्यूं समता सागर कर्न नदी,
 थाक्योड़ी सिसक्या लेत्रँ ही ॥

जद चित्रसेन बोल्यो—“सगती,
 जीवण री बळती डाळी नँ ।
 बचनां रो पाणी सींच खड्ग्या,
 थे माळी ज्यूं रुखवाळी नँ ॥

अधिपतियां जाण करघां पैली,
 सरणै रो बचन दियो कोनी ।
 जद जाण पड़ी जाड़ा चिपगी ,
 सिर अंचो फेर कियो कोनी ॥

बो नांव इसो है देव उरचा,
 सुरगां रा पत सीळा पड्ग्या ।
 धरती नँ धरदी तोल जका,
 सिमरय पांडू पीळा पड्ग्या ॥

अमरा रा मुखड़ा मरै जिता,
कोई नी अँडो कोल दियो ।
ज्यूं राज धरम रो माण वधा,
था सत राखयो उपकार कियो ॥

सिसदी रा मोटा हेर लिया,
च्याहूँ कूँटा चपकर लायो ।
ममता पोरस रो नैणा मे,
अँडो नी मेळ निजर आयो ॥

पण तो ही तरण नहीं मांगूँ,
आ पीड़ किया पाळीजैली ।
नँडो नातो है नेह जिस्थो,
हिवडँ री कळिया छीजैली ॥

कैतां हीं जीव हुवै दोरौ,
जणनी नीं बात पराई है ।
जदुनाथ द्वारका धणी जका,
थारा वँ सागी भाई है ॥

आ जैर बुझ्योडँ वाण जिया,
दाणी हिवडँ मे जा लागी ।
राणी गुरभी, माथो भुक्गयो,
काया मे पीट जिसी जागी ॥

गंधर्व राज री आंखडल्यां,
बा घास लुकी अणजाणी में ।
रंग राणी रो उडतां हीं ज्यूँ,
पुळ बही पीड़ रे पाणी मे ॥

मुखडो मुरभायं फूल जितो,
 वोल्यो—“ह पैली जागै हो ।
 या वात काळजो चूटैनी,
 करकै-ली, पीड़ पिछाणै हो ॥

जद हयनापुर मिर भुका दियो,
 नीं अरजुन वाळा वाण चलै ।
 रण किसो बैन रो भाई स्यूं,
 या किया रगत री धार भलै ॥

जुद्धा, जवरां रा जोर तुलै,
 कटणो मरणो मोटचारां रो ।
 जोघा जामं पाळै तो ही,
 रण आगण कोनी नारचां रो ॥

मिनखां नै काटै मिनख जठै,
 लोही स्यूं धरती लाल करै ।
 नारी, जिणरो तन मन कंवळो,
 कूंकर श्री अंवळो काम सरै ॥

दे देऊं मार कियों माता,
 मन मे पिछतावो नीं मावै ।
 पांहु मुकरचा जद चित्रसैन,
 अरव आंस्यूं सरण कियों चावै ॥

राणी मां बुरो मती मान्या,
 दुनियां रो सत बळ घटग्यो है ।
 थारै बस वाळी वात नहीं,
 आघो अंग पैळी नटग्यो है ॥

हेमायत्त ले परदेसी री,
 पारथ सारथ त्यू नही अडै ।
 कुण रण भालै जदुवा सागै,
 तिरलोकी स्यू नी पार पडै ॥

जद कृष्ण कवै है अपराधी,
 आखी दुनिया ही मान लियो ।
 आधीन न्याव है सबळा रै,
 जे बुरो कियो, तो भलो कियो ॥

ओ आछो है हूं एक मरूं,
 रण रुपियां घण मारचा जावै ।
 पण जग मान्यो पापी सिरसो,
 इण कारण मोटो दुख आवै ॥

अपराध हुयो है अणजाणै,
 हूं दड जितो कोनी दोसी ।
 इतरो ही मान मुडो माता,
 तो ही उपकार घणो होसी ॥”

दां, चित्रसेन सिर भुका लियो,
 राणी दो डग आगै आई ।
 बोली—“जे कृष्ण बड़ा है तो,
 तूं लागै ज्यूं छोटे भाई ॥

दुख कोनी सरण तनै दे दी,
 रण रुप ज्यावै तो रुप ज्यावै ।
 दोरप है, दीन-दयाल जकै,
 भाई नै भूँडावो आवै ॥

गोपाळ, करला इसी पाप,
मरणं स्यू वात घणी आगं ।
मनहै नै तोड़ मरोड दियो,
सुण लाय पलीता सा लागै ॥

मोटी करण्यी, काळख खोटी,
ओ करम नहीं है नां लायक ।
जदुवां रो मुगट हुवे काळो,
प्राणां नै पीड़ घणी गायक !

आधार मानखै रो घिसकै,
दोरप स्यूं हिवडो छीजं है ।
अं'डी अपरोगी कियां हुवे,
भीतरलो नहीं पतीजं है ॥

हालै है नीव धरम वाळी,
वळ कुंताळा रो नीं कोपै ।
पारथ ही जे पाछी ताकी,
मरजादा लीक इयां लोपै ॥

तो आज सुमद्रा एकलड़ी,
जूझेली जोर जुलम सागै ।
हु जीतां जामण जायै रो,
करणो आ काळख नीं लागै ॥

मन हळको कर मत चित्रसेन,
आ धरा धरम नी खोवैळी ।
हूं मर ज्याउं पण मुडूं नहीं,
अणहंती कदै न होवैली ॥

दुरखळ नै कृष्ण इयां मारै,
पांडू सरणै नै नट ज्यावै ।
दे वंस सासरो पीवर है,
अपजस रै काजळ में न्हावै ॥

घरती उतरै है गगन दूट,
गायक, हूं कूकर मुड ज्याऊं ?
नारी जीवण री परख आज,
पत जावै जे पाछी जाऊं ॥

नीं वात एक रै मरणै री,
आ चोट मरम पर आवै है ॥
कुळ, धरम, करम, सत, तेज, लाज,
हूं मुड्या मानखो जावै है ॥

छोटै रै सिर पर हाथ घरघां,
ओ सत पाल्यां ही स्यान रवै ।
मोटी ओ'डी मूंडो मोड़घां,
कूकर मोटोड़ी माण रवै ॥

कर इतो भरोसो कळाकार,
करणी मे कसर नहीं राखूं ।
तूं जव मरसो, हूं मिट ज्यास्यूं,
तन नै तैस्यूं पैली नाखूं ॥

मे जीतां भूंड नहीं आसी,
भाई री भौव भुजावां नै ।
पांडू जे भोम रुखाळा है,
नीं सौपै परंपरावां नै ॥

नी अडसी बळ कुंताळा रो,
 सरणागत पर सकट आसी ।
 जद पारथ घरणी दो फुळ री,
 पत राख निद्वार हो ज्यासी ॥”

केंदितो सुभद्रा साथ सहेल्या,
 सेवक बुला लिया है ।
 गधर्वराज नै सरण ले,
 रथ मारग घाल दिया है ॥

: २ :

पूत जणै पारथ सो सिमरथ,
कुंती सिरसी मावां ।
बज्जर सो छाती चोड़ी,
लावोड़ी सबळ भुजावां ॥

पोरस वण्यो पूतळो ज्युं,
सगती स्युं रगां भरचोड़ी ।
कूंत भरी कसियोडी काया,
ठाली वंठ घड़चोड़ी ॥

वाका भंवर भंवारा, रातें
डोरें री श्राखड़ल्यां ।
भळक रयो सूरापो मुखडें,
भू छड़ल्यां वांकड़ल्यां ॥

केस कळायण मुगट भिळामिळ,
बीजळ भळके श्रंग मे ।
सूरज किरण लिलाड़ी पळकें,
केसर घुळी रंग मे ॥

हाय रवं गाडीव जकै नै,
 निदण करै धरणी-धर ।
 धरमराज रो राज मुगट,
 टै'रघोडो जिण काधा पर ॥

बाणा स्त्रुं रण तोरया, मेटी
 ओडो जकी श्यटी है ।
 जिण रै बळ पाङ्गु रै कुळ रो,
 ऊची धजा खडी है ॥

ओ अरजन, वो लूंठो सागर,
 पार कियो नीं कोई ।
 अड़िया कितरा अपर वळी,
 छोळा मे कूत उबोई ॥

बाहू बळ स्यूं मद, कितरै,
 भूपां रा भाग दिया है ।
 चुभतोड़ै संजा नै मोड़्या,
 जवरा जेर किया है ॥

सगती रो वो रूप जकै नै,
 सूरूपो निव ज्यावै ।
 अ्रै'डो सबळो विरळो कोई,
 जुगां जुगा स्यूं आवै ॥

जिण रो तेज रखाळै सत नै,
 तामस मिटै अ्रधाते ।
 स्तता नै मीता नै मीठो,
 पाप्यां नै हब खारो ॥

धरम घरा रो निरभं कर,
अरम री जटां डिगाई ।
ओ पै'लो नर अवतारी,
गीता गोपाळ सुणाई ॥

वान्या रो ईसर, नारायण,
सारथ दण्यो जऊं रो ।
घणा जलमिया नर पूरा,
पण इतो माण कुणसै रो ?

त्याम नाव राधा रळिया विन,
प्रेम रूप नीं 'पूरो ।
पाप मिटावण कृष्ण वियां है,
अरजुन बिना अघूरो ॥

म्हारथिया रो मुगट मणी,
निरसळ दादळ रं जल सो ।
ओ पारथ भारत रो थंभो,
अचळो हेसाचळ सो ॥

जोगी जिसै युधिष्ठर रं,
सासण री ढाल जको है ।
पीव प्राण रो जीव जोत,
सोहाग सुमद्रा रो है ।

राव रावळं मे वडतां हीं,
अजब नजारो देख्यो ।
राणी बखतर कसियोडी,
उणमुण उणियारो देख्यो ॥

देवराज रो हूजो तन,
 घण सामे ऊभ्यो वृक्षे !
 राणी वयू श्रो भेन, जके नै,
 पैर सूरवा जूझे ॥

रेसम सिरसो तन वयतर मे,
 करडी किसी जची है ?
 राजमैल मे रण चढणै रो,
 कूंकर रोळ मची है !

मरवण वयो रीस्योड़ी मुखडो,
 पलकां भरियो पाणी ?
 कोप किसो कूंकर ऊभा हो,
 रूस्योड़ी सी राणी ?

रण चढतै सूररा रो वानो,
 वयू नारी तन साजे ?
 आज कियां तातो बायरियो,
 अंबळी दिस मे बाजे !

राव युधिष्ठिर वळी भीव सा,
 जवर जेठ बळ वाळा ।
 नकुळ जिसा नरवर देवर,
 सहदेव जिसा भुरजाळा ॥

म्हां ऊभा धरणी था ऊपर,
 मार कठे स्यूं आयो ?
 रगमैल मे रण चंडी-सो,
 राणी रूप बणायो ॥

किसँ दंत रँ कारण दुग्गा
काळ रूप नँ धारँ ?
पारय री प्यारी घण, कुण पन,
करडी आज विचारँ ?

वात अचभँ वाळी भामग,
था अँ भेम किया है ।”
इचरज भरिया नँण पीय न,
घण रँ मुल टिकिया है ॥

कवळो भिळमिळ तन, वग्यतर नी,
चादर हद करडी है ।
ज्यूं आकार आतमा धर,
करमा स्यूं कसी लडी है ॥

चोली पारय-घरण, पीव नँ,
पलकां मे लेती सी ।
वाणी री गंगा फूटी,
मन रो भाखर भेती सी ॥

“ नाथ वात अँ'डी चुभती है,
हिंवडो वींध दियो है ।
सरणँ मे आर्यँ नँ नटग्या,
हौणो करम कियो है ॥

सिघासण घूज्यो पांङ्ग रो,
जग जिणनँ पूजँ है ।
आज अंधारो अँ'डो, पिव,
मारग कोनी सूक्षँ है ॥

सिमरय फुंताळा रा माथा,
भुकग्या हे श्रकरम नै ।
सुरायो धरती स्पूं लोपे,
संणो छात्र — धरम नै ॥

अणहंती नै निविया पारय,
मोटो अपजस आसी ।
राज-वंम री काळय, दुनिया,
कदे नहीं विसरासी ॥

धरम—राज री धरती पर,
जे अणहक मिनख सरलो ।
तो पारय दुरबळ री दूजो,
रिछ्या किसो करलो ?

जोरावर जोधा ही सरणो,
सत नै दियां डरे है ।
न्याय पठंगे जके नरां रे,
वे इन्याय करै है ॥

वीरो म्हारो अंचळो अडिदो,
जद घण हियो बळै है ।
थारो पोरस अंडो याक्यो,
पिरथी पाप पळै है ॥

प्रीतम सत दो कुळ रो छीजं,
मरगै जिती घडी है ।
इण कारण हीं आज सुमद्रा,
सखतर कस्या खडी है ॥

पाङ्गं रै कुल रो तप लोपै,
धरा धरम नी राख्यो ।
किया मानखो रै'सी" कै
राणी निसकारो नारयो ॥

एक सास हारचे हिवडै रो,
जिया मरम नै खोत्यो ।
आली आखडत्यां मे पारथ,
पीड तोलतो दोत्यो ॥

"राणी चित्रसेन कुण गोमंद,
पैली हिये विचारो ।
दळ पोरस नै विना वात,
मत तीखा ताना मारो ॥

स्याम जका सुख दुख मे म्हारै,
सदा रचा रखवाळा ।
आज जिकारी करण्यां लारै,
घर भोगें कुंताळा ॥

जरासिध नै मेढायो, जइ
पाङ्ग कुळ रो पोखी ।
मेढ्या दानव, कस, किता ही,
जिण बुनिया रा दोखी ॥

म्हाभारत रो समंद, जकं रै,
सा'रै पार कियो है ।
जद जद ओडी आई, का'नै,
आडो हाथ दियो है ॥

पाचाळी री ताज रात दी,
भरियं करू गण मे ।
पारय तारं थे आया,
वं घड्यां चितारो मन मे ।

धरमराज रा छत्र मुगट,
सं कुण रं जोर तणा हे ।
राणी पांडू रं कुळ पर,
जिण रा उपकार घणा हे ॥

उणी कृष्ण रो अपराधी,
म्हारं गढ़ सरणो पात्ती ।
तो उजळापो किया रवंळो,
कृतघणता रं ज्यासी ॥

सरण दियां रण तो रूपज्यासी,
भली नहीं छूटली ।
वंर बसैलो गिरधर सागं,
बात नहीं खूटली ॥

पाडू अधर उठालं, का'नो,
इतरो हलको कोनी ।
आखो जग रळ पण लोपादं,
राणी बळ वो कोनी ॥

देवराज जद मीत आपरं
रो, नी बोभ उठावें ।
दूजो कुण अबखी मे कूदं,
लाय बिचाळं आवें ॥

सेल सितार रो अजै सदासिव,
भार नहीं आल्यो है ।
क्रम लोक रो घणी, जक नै
पग धरता पाल्यो है ॥

बैकूँठा राजेसर जिण नै
नो सरणो है देवै ।
उण पापी रो संकट सिर
पाइ ही कुंकर लंवे ॥

दंड मिलै दोसी नै, जिण रं
कोय न आडो आवै ।
तीन लोक नी ओटै, फेरै
ब्यूं बो भार उठावै ।

चित्रसैन वैभव मद डूब्यो,
आपो जे न बिसरतो ।
धरम रूप गोमंद-सो ग्यानी,
झंड़ो पण नीं करतो ॥

तपसी रो काया पर थूकै,
मिनख भरण जोगो है ।
सरण इसै नै पाप करम है,
नहीं करण जोगो है ॥

ब्यूं अपराधी रो हेमायत,
ऊंधी बात बधावो ।
रणतां स्यूं भोमी भोजै,
सत झंड़ो रण रोपावो ॥

म्हान्भारत रो रातो प्रोजूँ
 सूक्चो फोनी राणी ।
 जुगा-जुगा नीं पूर सकै जग,
 वां जोधा रो हाणी ॥

आज फेर रण जदुवा स्यूँ,
 अण चीती राड हुवैली ।
 घाण मचैलो मिनरा रो,
 आ घरा उजाड़ हुवैली ॥

बाप बायरा वालक विलखै,
 विधवा वा रो टोल्या ।
 एक चिणख नी बुझ्या,
 जगैली जाण कितरी होल्या ॥

अणगिण मारचा जाय अकारण,
 राणी पाप बडो है ।
 मिनखा रो घरती रै सिर पर,
 रण रो श्राप बडो है ॥

काया भार बणै माया,
 मत पकड़ो बा अपरोगी ।
 एक अकरमी खूटै हूटै,
 बात नहीं रण जोगी ॥

जे थे मानो बिना विचारचां,
 गेसंद गायक मारै ।
 तौई जोर भलो नी लागै,
 जदुवां स्यूँ आंपांरै ॥

पाप कठैरो, व्यूं सिर सांभां,
ओ अड़णो भैड़ो है ।
गिरघर ग्यानी है, मित्तर है,
हूजां स्यूं नैड़ो है ॥

सबळ मीत स्यूं वैर अकारण,
किणी भांत नीं सो'वै ।
भारत री दो मीव सगत,
व्यूं आपस मे रण होवै ॥

पांङ्ग जादव एक मुलक री,
काया रा भुज दो है ।
हथनापुर जे मिटै द्वारका,
आछो करम किसो है ।

हाथ, हाथ नै काटै, अँड़ो
मारग मत अँवळो लो ।
भली बुरी नै तोलो मन में,
दसिया बंधण खोलो ॥

अणभांतां बखतर काया,
धां कूड़ो कोप करचो है ।”
कै, पारथ घण रँ कांधे पर,
घण हित हाथ घरचो है ॥

घरा ताकती खड़ी सुभद्रा,
ज्यूं सुपनं स्यूं जागी ।
पहूप पांखड़पा सी आंखड़ल्यां,
प्रीतम रँ मुख लागी ॥

राणी रै कोयां में दीर्घ,
 अरजुन रो उणियारो ।
 साली भोर उगाळी मे,
 ज्यूं जाभरकं रो तारो ॥

कंवळोडें फंठा री वाणी,
 तीखो ताप भरचोडो ।
 छळक रघो सवदां राणी रै,
 मन सताप भरचोडो ॥

“कथ, बात रो तंत इतो है,
 थोर्या सत्ता थारी ।
 पाङ्ग कुळ रो सासण, भोगें,
 दबियारी जुदुवा री ॥

राज नीति, ने, नाता स्वार्थ,
 साध्यो धरम भूलग्या ।
 दया दूबळा रा रीछपा रो,
 मोटो धरम भूलग्या ॥

सुरा री पत लोपो,
 सरणो सत नै दियां उरो ही ।
 धरती रा बण रूखवाळा,
 रूठो घणियाप करो हो ॥

कान्ह सामनें दीख्यां, कूडो,
 मन समभाय खड्घा हो ।
 जुद्धा स्यूं जग जीत, जुद्ध नै,
 भाप बणाय खड्घा हो ॥

जद सूरायो म्हा'भारत रो,
 आज इयां भोगो हो ।
 पुरसारथ रो पुत्र, जकें नै,
 पाप जियां भोगो हो ॥

सबळ मीत अकरम अडिये स्यूं,
 सत्ता भै खावै है ।
 होळी सिलगा मिनखपणै री,
 रण टाळघो जावै है ।

भूल्या कूंत अनूंत हूंत री,
 भूपत अँडा होग्या ।
 आज सिमरथां रो सत डूबै,
 नाता नँडा होग्या ॥

भली बंधे हद मरजादा री,
 लीकां लोक करम री ।
 मितरता निज स्वार्थ बणग्या,
 सीवां मिनख घरम री ॥

पण आ राख रखापत राख्यां,
 करम लुकै नीं काळा ।
 घरा घरम छोडे जे भुकसी,
 कायर ज्यूं कुंताळा ॥

कूड कपट ओटें जे प्रीतम,
 मन समभायो जासी ।
 नाट निवायां रण टळ ज्यासी,
 फळ तो सामा आसी ॥

परतक दविघारी री सासां,
 बायरिये बँवेली ।
 वडे नरां री बातां, दुनिया,
 जुगा जुगां फँवेली ॥

राज घरम जे निवँ जुलम नै,
 सत्ता री सत डळिया ।
 सगती री मरजादा मुरभे,
 पुन्न करम री कळिया ॥

जद अकरम सिवां नै तोडें,
 जे नीं रगत खिडेलो ।
 तो मिनखां री नडां, रातो
 पाणी ज्यूं वण रेलो ॥

दुद्ध टल्यां गिणती वध ज्यावं,
 पिंड मांस रा पारथ ।
 कायर कूड़ा सांस लेवता,
 मुडदा मिनख अकारथ ॥

बाप बायरां हींणा बाळक,
 तत बायरा होवें ।
 सत हींणा री सघवां वां हीं,
 निघवां वां ज्यूं रोवें ।

अं'डें काळो जीवण स्यूं तो,
 आछो है मिट ज्यावं ।
 दुनियां मरें जिती होगी है,
 सत सरणो नीं पावं ।

निदळो एक जकं री रिद्ध्या,
आखो जगत नटे है ।
सिमरय भूपां समराटां मे,
चाकी तंत कठे है ?

तीन लोक री महमां लोपी,
सगती न्याव करण री ।
अमर नट्यां दुख भोगण रे डर,
दोरप मिनख नटण री ॥

धूजे देव विलास नास स्यूं,
बस नी मरण जकां रे ।
हाथ जोड़े हरदम हीं हाजर,
काळ खड्यो मिनखां रे ॥

अमर मरे नी मरणों चायां,
जव दुख स्यूं डरणो है ।
मिनख निवे क्यूं अणहंती ने,
अंत पंत मरणो है ॥

सत, पत, न्याव, घरम, घरती रे
कारण जका न जूझै ।
बं जलम्या ही मरे सरोसा,
ठोडे मरण नीं सूझै ॥

गिरघर थारे तो मित्तर है,
म्हारे बाप जिता है ।
परम पुत्र सा, पूजण जोगा,
बडा घरम सिरसा है ॥

पलक टिकी नी जकै तेज पर,
 श्रै'डा तिमरय भाई ।
 माथो निवै जकारै आगै,
 वा स्यूं किसी लडाई ॥

पण जिण तेज तिलोकी उजळी,
 भकरम ढाक रयो है ।
 अकळंक चाद फरण फाळो,
 ज्यूं राहू ताक रयो है ॥

जदुपत रो पग आलडग्यो है,
 थानै हेलो मारै ।
 पांङ्ग फुळ कृतघ्न होसी,
 जे डिगतां नहीं उवारै ॥

का'नै री कीरत पर, कोभी,
 काळख लाग रयी है ।
 प्रीतम प्राण जगै, भीतर वं,
 लपटां जाग रयी है ॥

पीड़ हियै री दीखै कोनी,
 तोल करचो नीं जावै ।
 अपरोगी श्रै'डी भैड़ी है,
 सं'ण मे नीं आवै ॥

मन रो बोझ सबद नीं सांभै,
 बोलूं तो के बोलूं ।
 आभो घरा भिळं है पारथ,
 बखतर कूंकर खोलूं ?

चोल अणसें भिळग्यो घण रो,
 आसू सीव विसरग्यो ।
 व्यू कोई वंरागी, माया
 वधण तोड़ निसरग्यो ॥

अवखो भेस सहज सी नारी,
 पलक प्राण पट खोल्यो ।
 एक अळूक्षे मे उलझ्योसो,
 पारथ पाछो बोल्यो ॥

“राणी भार हिये पर थारै,
 हृद कर वधग्यो लागै ।
 जइ अं बखतर नीर नैण रो,
 रण री जडुपत सागै ॥

जे इतरो मोटो मान्यो थां,
 सरणांगत नै नटणो ।
 मितरता रो मिनख घरम रो,
 हेली जे रण खटणो ॥

कृतघणता रो पाप का'न स्यूं,
 नहीं अड़्यां जे आवै ।
 तो रण भाल तिलोकी स्यूं,
 पाहू रो कुळ टकरावै ॥

पारथ रण स्यूं डरै, जलम रो
 अंड़ी रात नहीं है ।
 जे गोमद घण सिमरथ,
 म्हारा हळका हाथ नहीं है ॥

पण चीता अपराधी नायक,
जीवण धरम क मरणो ।
घडी-घडी मन दुवधा भोगे,
के करणो नी करणो ॥

एकै कानी पण जिण रो,
वो जगत गत् निरमो हे ।
दुर्जे कानी थे अडग्या,
कुण जाण धरम किमो हे ॥

पाडू-वस जकारी वाणी,
धरम जिया कर मानी ।
धरमराज वे गया तीरया,
धरा धरम रा ग्यानी ॥

तारै अणचीत्यो अवखो,
ओ आटो आय अडचो हे ।
राज धरम री छाण करण रो,
भेडो भार पडचो हे ॥

म्हाभारत में मन अटक्यो,
जद मारग जके बतायो ।
घणं माण स्यूं-जिण गोमद रो,
हं नित हुकम बजायो ॥

थे मानो वो गीता गावण,
मारग स्यूं आखडग्यो ।
सूरज किरण हुवं है मंली,
हसी अंधारो अडग्यो ॥

वयूँ अणहूता ही अउ जदुपत,
 निनख मारणो चावै ।
 ग्यानेसर ही गू गा होग्या,
 सानण मे नी आवै ॥

पण जे थारी बात साच,
 अणहूती गायक सागै ।
 जे वेजा है तोई थानै,
 इती बडी कयो लागै ?

एक भूल जे हुवै, किया है
 संकट धरा धरम नै ?
 ऊचो घणो उछाळो हो ये,
 अणजाणै अकरम नै ॥

कूंकर पुन्न धरण रो उळटै,
 सरणो एक मिनख रो ?”
 जद धण बात बिचाळै काटी,
 बोली—“ पारथ ठै'रो ॥

राजा रावण अकरम अड,
 नीता हर लक लुंटावै ।
 पण जे राम मंदोदर हरलै,
 जगत कठीनै जावै ॥

प्रीतम अकरम छोटी मोटी,
 करता स्यूं कूंतीजै ।
 अस्ण, वंस वणियां नी बाकी,
 धरा धरम उळटीजै ॥

सिमरथ जडुपत हागा हिया.
 कठे पाप रो लेतो ।
 थे अकरम सगं गिरधर रो
 गौरव वय नी देतो ॥

रि डिगिया धरती अघारो,
 तप लोपे णिया रो ।
 जगत पटंगे जके नरा रे,
 पाप भिळं भुज वागे ॥

पीक भून स्पूंकण कारण,
 मरण घणो मोटो है ।
 हद अणहूतो अकरम होवै,
 थे मानो छोटी है ॥

अभिमन्यू रो मरण अणूतो.
 बो दिन याद करो थे ।
 चीतो कितरी पीड़ हुवै,
 छाती पर हाथ धरो थे ॥

अणहक मरगो एक मिनख रो,
 सास अमूज रही है ।
 गायक रे घरणी रो सिसवय,
 काना गुंज रही है ॥

जडुपत परतक पाप भिळं है,
 हळको कियां कहीजे ।
 नहीं-नहीं प्रीतम, आ काळख
 में स्पूंक नहीं सहीजे ॥

हरि री महमा लोप हुवैली,
 भारत मिळ ज्यावैलो ।
 कुण जाणें ओ अकरम, तारें
 किता पाप लावैलो ॥

खेल जुवें रो अकरम हो, वो
 कितरा पाप जगाया ।
 वैभव लोप्यो काळख आई,
 कु ताळा दुख पाया ॥

आज लारली वीती वातां,
 सुपना सिरसी लागें ।
 करु कुळ रा वै सिमरय,
 जद भुकिया अकरम आगें ॥

दुरियोधन री भरी सभा,
 दुखियारी द्रोपद रोई ।
 उण दिन सूरान आख मींचली,
 भीड़ पड़घो नी कोई ॥

किती आस ले आख, लुगाई
 जोघां सामें ताक्यो ।
 भीसम द्रोण जिता मोटा नर,
 सगळां हीं सत नाक्यो ॥

ग्यान, करम, बळ, कुळ मरजादा,
 घरम छोण सैं होया ।
 वो अकरम करु रें कुळ मे,
 बीज नास रा बोया ॥

आज पाटुवा रँ घर मे.
 रन् घिर गाई वँ घडिया ।
 चित्रसेन री आन्या मे,
 द्रोपद री आनू लडिया ॥

धरम रताळा कु ताळा रँ
 सत सरणो नी पामी ।
 तो दुर्योधन धर्मराज मे,
 भेद किसो रँ ज्यामी ॥

पारथ द्यू कुरखेतर में.
 दिन हाण घाण रा आया ।
 देखो केरूपत रँ अकरम,
 कितरा जोध खपाया ॥

कितरा मूंगा रतन विखरिया,
 कितो उछाळ हुई है ।
 रगता रा खाळा वंग्या,
 धरती कगाल हुई है ।

द्रोण गरू पूजा अधिकारी,
 भीसम जिसा वडेरा ।
 कैरू रो मोटो कुळ खपग्यो,
 सूना पडचा वसेरा ॥

दानी जबरा वीर करण सा,
 जेठ जमी पर सोग्या ।
 जाणं कितरी मानडिया रा,
 खोळा खाली होग्या ॥

धरती अधर उठा लेता
 च तिणका ज्यू दूटचा है ।
 कारण कितो असूटा इतरा
 नर नरवर खूटचा है ॥

पग-पग मुकट रुळ्चा जोधा रा
 पग-पग हाड पडचा है ।
 कुण कारण छेकट भाया स्यूं,
 पाइ अडचा लडचा है ॥

अकरम हीं मेटण नै, पारथ,
 था वो रगत खिडायो ।
 मिनख धरम जुग-जुग जुझ्यो है,
 जद-जद अकरम श्रयो ॥

पण ये जकै धरम रै कारण
 चडा वडेरा मारो ।
 आज वरुण जद सामा श्राया,
 वो ही कियां विसारो ॥

सूर धरम जिण कारण जोधा,
 सदा लोवडा लागे ।
 जद अकरम रो रावण श्रावै,
 राम मिनख मे जागै,

आज थकै वो राम थारलो,
 सत रो तेज ढळै है ।
 कुंताळा रो जियां मानखो,
 माटी मांय रळै है ॥

म्हाभारत मे निररचो, वो
वीरा रो रगत पुकारै ।
धरम जुद्र रा धरम कपाळा,
ऊभो किया कनारै ॥

जिण धरती पर पाड़ रो फुळ,
अकरम भेटण जूजै ।
निवें जगत उण कुररोतर नै,
धरम खेत क' पूजै ॥

पण जे सरणै आया आडा,
थारा भुज नी आवै ।
वा म्हाभारत भोम वालमा,
पाप खेत वणज्यावै ॥

स्वारथ खातर पांडू अड़िया
आखो जग क'वलो ।
धरम राज रो जद नी अ'ड़ो,
धरा माण र'वलो ॥

प्रीतम थे कायर बाजोला,
माड़ी बात कितो है ?
छात्र धरम पर आ काळख तो
जीतां मरण जिती है ॥

आज सरण आये रो संकट,
जे पांडू नी भालै ।
तो जुग-जुग बळ कुंताळा पर,
धरती घूड उछाळै ॥

धरम करम सत्ता सत थारो,
सो अकरम रं हेटं ।
छोटी बात किया थे समझो,
जकी मानखो मेटं ॥

म्हारं तो हिंवाडं मे खडकं,
एक चढं उतरं है ।
धरती रो थभो हालं है,
गिरधर जुलम करं है ॥

थे आगो पीछो जोवो हो,
डुवधा स्यूं मन भरियो ।
अबला जलम जुगाई रो,
जीवण मे आज अखरियो ॥

अभिमन्यूं रो मरण आज,
सोटो वण सामो आवं ।
हारघोडी सी हुई सुभद्रा,
कुण पर हुकम चलावें ॥

तोही हियो हठी उफणै,
भीतरलो सारं कोनी ।
जुलम नहीं सै'णी आवें,
हारघां हों हारं कोनी ॥

पारथ कियां वतावो ओ मन,
घोंगाणं स्यूं धीजं ?
कियां अणूती नै हूंतो कं,
भूठी साख नरीजं ?

कियां कहीजें सिमरथ धरती,
 हृद हीणी दुरवळ नै ?
 एक सबळ रो वळ दात्र है ,
 जग रै श्रातम वळ नै !

कूड केवटै दंभ मुनी रो,
 जदुपत पाप पडै है ।
 श्रै'ड़ी हुई निछत्री, सत पत,
 कोई नहीं अडै हे ॥

मिनख इसो मिनखा रो मरग्यो,
 सै अकरम रो साजै ।
 पोरस हीण पुरस रो दुनिया,
 नारी निविया लाजै ॥

जद श्रै बख्तर ससूतर साथी,
 एक भरोसो सत रो ।
 थे ऊना पण भार सुभद्रा पर,
 दो कुळ री पत रो ॥

हं असरण नै सरणो दीनो,
 हं हीं जुद्ध करूंली ।
 गिरघर जद गायक मारूंला,
 पैली जूभ मरूंली" ॥

श्रै राणी रा बोल बाण सा,
 अरजुन रो नर जाग्यो,
 आभे ज्यूं ढक लिको हियो,
 पोरस रो बादळ छाग्यो ॥

गैर गंभीरो क्रोष ओपनी,
 आय खडचो नंजा मे ।
 जद राणी रो मरम वोनग्यो,
 पारथ रं वंणा मे ॥

“वम घरणी वस करो,
 हिये रो हेमाचळ हालै है ।
 घणो भुळसग्यो नर पारथ रो,
 अरव भळ नीं भालै है ॥

म्हारी हरि पर श्रघा, उण स्यूं
 वडो ओळभो थारो ।
 अरव गोमंद नै अरघ मिलेलो,
 रण आंगण रगता रो ॥

आखडतै मितर रं आडो,
 पारथ रो भुज अडसी ।
 कै तो गिरधर आपो चीतै,
 नी, पण पाछो पडसी ॥

घरणी अरजुन रं आघे तन,
 जिण नै अभै कियो है ।
 सिमरथ पांडू कुळ रो राणी,
 जीवण दान दियो है ॥

राज वंस वंधग्यो है पारथ,
 जद घण कोल करचो थां ।
 बात खूटगी जद गायक रं,
 माथं हाथ घर्यो थां ॥

चात्रं जितगे सिसरय कानो,
 पय पण नहीं मरुनो ।
 लारय वात, मरणागत राणी,
 थाने नहीं मरुनो ॥

धरती पर धणियापो, आपो
 पाडू कुळ रो रँसी ।
 धरमराज दुग्गियोधन मिग्गो,
 दुनिघा कदं न कँसी ॥

रीत किसी म्हा ऊभा थां पर,
 भीड़ किया आवँली ।
 पारथ रा भुज थाकया पँली,
 भोम उळट ज्यावँली ॥

थे बख्तर सस्तर छोडो,
 था ताई भार नहीं है ।
 जुद्ध नरां री जोरा मरवी,
 कवळा कार नहीं है" ॥

इतरो कँतां पारथ री,
 अणजाणै भुजा घनुस पर
 जद राणी रँ एक जुद्ध,
 दूजो ही छिडग्यो मन पर ॥

नारी जीवण पीर सासरो,
 दोनु हीं म्हारा है ।
 पारथ सारथ किसी परायो,
 दोनु हीं प्यारा है ॥

आज रगत रँ नातै साथै,
सिर री माग अडै है ।
हिवडा हाय हुई अवखाई,
कितरो बोझ पड़ै है ॥

एकै कानी पीव जीव रो,
म्हारो जूण जमारो ।
दूजै कानी जामण - जायो,
वैनडली नै प्यारो ॥

ओ सासू रो नैण चानणो,
वो हिवडो जामण रो ।
राखी रँ तारां स्यूं तुलसी,
आज सेवरो धण रो ॥

वै भाई, सोहाग अठिनै,
कुण री खैर मनाऊं ।
दोना कानी खडचो अमंगळ,
मंगळ कुण रो गाऊं ॥

जीत किसै री जे बोलीजै,
हद भारी खारी है ।
हँ पीड़ीजूं दोना कानी,
हार सुभद्रा री है ॥

मनडा ठोड हूँड ठैरण री,
नगक कितो भटकासी ।
अरे मानखै री मरजादा,
अंतस कितो घुखासी ॥

माई प्रीनम दोन भागी,
 मन नारी ने रोयो ।
 पीड घणी पलका मे,
 राणी पारय माम जोयो ॥

बोली "हिचड न कसममतो,
 जतो बध तो तुलग्यो ।
 जीवण रो अधिकार मिनरा रो,
 दो सगत्या मे तुलग्यो ॥

पण ओ राजधरम राणी रो,
 जिण रण रोपायो हे ।
 पीव हिये दुरबळ नारी रै,
 सकट अब आयो है ॥

बख्तर कूकर खोलूँ,
 मन पर हूजी अणी अडै है ।
 नेचो करतां नहीं बणै,
 भाई भरतार लडै है ॥

पीव जीव मे लाय लगाती,
 अ घड़िया धूजाइ ।
 पल-पल भार बधै परळै सो,
 हद हिवडो दुख पावै ॥

पलक ओट सैणी नी आवै,
 गोट किताही जागै ।
 आज घोट हूती रो ओटो,
 घणो अणूंतो लागै ॥

प्रीतम इतरो मानो,
रण मे सागँ आज रहुली ।
दज्जर जको पडे छाती पर,
आख्या देस सहली ॥

जदुपत स्यू थारो रण होसी,
चीत्या हीं मन छोर्जे ।
आज मैल मे जी नी लागँ,
सागँ रया पतीजे ॥

नारी रै मन री गत वालम,
नारी आप अजाणी ।
कियां वताऊँ" कै' पारथ रै,
हिये लागगी राणी ॥

: ३ :

सोनं मंढिये रथ मे जद्रुपत,
किरणा सी भिळमिळ काया री ।
ज्यूं ग्यान जोत भाकी भळकं,
ले ओट मो'वनी माया री ॥

घन घुळघो चानणी दूधाळी,
भीणै पीताम्बर रेसा मे ।
सिर मोर मुगट पळकं कुडळ,
ले'रातें काजळ फेसा मे ॥

आखडल्यां हेम हियो करती,
हंसां रै मानसरोवर सी ।
उणियारै जोत अखंड जकी,
तुरियै ग्याल्यां रै गौरव सी ॥

जिण री वंसी रो राग जाग,
मन-ताप हरें तिरलोकी रो ।
जन-जन रो मो'वन ओ मोवन,
आधार अखूटो अचनी रो ॥

चौरा रै मादण चौर जणे
 चित्तचौर गोपीग आळो हे ।
 ओ का'न शब्दपळो छोग ने
 भोळो गया ने र्याळो हे ॥

छंलां मे वृज ने अग्रचैन.
 रसिका रो रामाविहारी हे ।
 राधा रो हिवडो हरण म्याम.
 सतां रो सुख अवतारी हे ॥

नटखटियो लाल जसोदा रो,
 ओ कळाकार रो नटनागर ।
 दुबळा रो मोत मुदाम रो,
 भगता नै इमरत रो सागर ॥

ओ काळ कंस रो, क्रांतीदूत,
 डूवतटां रो गिरधारी हे ।
 लूठां मे घीस-द्वारवा रो,
 गोकळ रो कुजविहारी हे ॥

पाडुडां राज रुखाळणियो,
 सत लाज रुखाळो द्रोपद रो ।
 पारथ रै प्रेम वंध्यो सारथ,
 वेरी दुरियोधन रै मद रो ॥

मोहित कैरु रो समा करे,
 बो चातर दूत जुधिस्ठर रो ।
 ममता भिळ बेसुध बिदुराणी,
 महमान बिदुरजी रै घर रो ॥

कुरखेनर गार-नुदरमण री,
 सधर भरतो पाचाळी रो ।
 भिळतै भारत आघार जको,
 टीटोडी नी रणमाळी रो ॥

ध्यान्या आळो धूर ध्यान रूप,
 गीता गावण ग्यानेसर है ।
 ओ करम जोग रो अडिग थभ,
 नर है नारायण ईश्वर है ॥

भारत री अमिट विभूति है,
 इचरज है आखी अरवनी रो ।
 निरलेप करम रै काजळ मे,
 सिमरथ ओ लाल देवकी रो ॥

जग मायारात, माणसा नै,
 आसा री किरण उजास जको ।
 पारथ सागै टकरण चाल्यो,
 पांडव कुळ रो विसवास जको ॥

जद्रुपत चीतै मन ही मन मे,
 मिनखां रै मन री निबळ्हाई ।
 चेतो चूकचोडो कळाकार,
 परबत सी भूल बधी राई ॥

वो पीक पान आळो छांटो,
 आंटो कितरो मोटो वणग्यो ।
 मन मथ्यो रिसी रो, ग्यानी रो,
 त्यागी रो अहम कितो तणग्यो ॥

वण रीस-रीस राती-पीळी,
 वळती-भळ गालव री काया ।
 जदुगण नै भळ मे भाल लियो,
 जोधा रा हिंवडां सिळगाया ॥

अधरम री हद है ओ अकरम,
 जदु जोधां ताती सास भरी ।
 धरती रै पुत्र, प्रतिष्ठा पर,
 जिण इसी अणूती चोट करी ॥

बो पापी जीवण जोग नहीं,
 भिनखां रो रगत उफण बोल्यो ।
 तपसी रै मन रो ताप दुळच्यो,
 पण वणग्यो रण-रसतो खोल्यो ॥

इण राज-भोग रै मारग मे,
 बिखरचा कितरा तीखा काटा ।
 अणचाया किता अळूभा है,
 गाठा कितरी? कितरा आंटा ॥

गंधर्व, जकै नै धरम आज
 जदुआं रो भेटचो चावै है ।
 उण री हेमायत छात्र-धरम,
 पाडव रो धाडो आवै है ॥

आवै बो जको हियो देव.
 हरियो हो बाया भर लेवै ।
 कै'मीत-सखा, हद धणं हेत
 इण्पोड़ी सो ता'वो लेवै ॥

बो आज जिसन नी काया पर,
 बाणां री चोट करण चढग्यो ।
 कुंताळो वणग्यो रसवाळो-
 नायक नै श्रोट करण चढग्यो ॥

पण पारथ नर भावा भरियो,
 कुण जाणै टेक कियां रै'सी ।
 जे रामै आ, आयो भूतै,
 विरभळ स्यू वाण फिण वै'सी ॥

पुरखेतर मे हीं घडी-घडी,
 जिण रो मन उड-उड भागै हो ।
 कैर छीजै ता, देख-देख,
 बैराग जकै मे जागै हो ॥

भीसम स्यूं, द्रोणाचारी स्यूं,
 लहतै रा भाव भटक ज्याता ।
 हूं करतो कितरो सावधान,
 पण रै'रै' हाथ अटक ज्याता ॥

बुध चैतावैलो आज बियां,
 जे मन कंवळ्ळई जागैली ।
 हूरापो नेव बंध्यो निवसी,
 तो हद स्यूं हळकी लागैली ॥

सिर आयो करडो करम इसो,
 अ्यूं इमी मान बिस पीणो है ।
 पारथ प्यारा मजबूत रही,
 जोधा रो मारग भीणो है ॥

नी ग्राज किसन गीता गावँ,
 आपे ही नीत चित्तारे तूँ ।
 विसवास, आस कर सारय री,
 हर कर हिवड़ी मत हारे तूँ ॥

समभे मितर री मजदूरी,
 हूँ मीत मिटावण आऊं हूँ ।
 मायै री मांग सुभद्रा री,
 मन जोत बुभावण आऊं हूँ ॥

गायक रै जीवण रो ओटो,
 आं हाथां ढावण आऊं हूँ ।
 हयनापुर रो सत सुरापो,
 वळ नै उलटावण आऊं हूँ ॥

सिर ले ग्यानी रो अहम् ताप,
 तन लोक धरम रै बंधण में ।
 दाणा मे काळ लियां आऊं,
 हूँ आप जिया बधतो रण में ॥

रण करम खेत कुण स्याम सखा,
 मत चीतै पूजण जोगो है ।
 धर धरम रुखाळो सुरापो ,
 तूँ सतपत जूझण जोगो है ॥

पर दुख पड घै'ड़ी भट भालें,
 दूजो दुण सिमरथ त्यागी है ।
 पाहू मत भूले, तै पर ही,
 भवनी री मांस्यां लागी है ॥

तुं मोटी प्राप्त मानर्त्त नी.
 गळ-ढळिया आज सरं कोनी ।
 ज्यूं नीलकठ ही भाल सकं
 हूजे स्यू जै'र जरं कोनी ॥

पण पाळण किसन बप्यो आवं,
 रोकण नै तोन भुजावा नै ।
 नितर प्यारा कायू रायं,
 यनडै रै दुरवळ भावा नै ॥

इण तरियां हेत हिलोरा मे,
 हरि हिये रो अरजुन समभावं ।
 नर तन मे बसियो नारायण,
 नर ज्यूं चितन करतो जावं ॥

लै रातें अंतस उयल-पुयल,
 जद धरमराज री हद आगी ।
 बळ उमड रयो हथनापुर री,
 सैना पर दूर निजर लागी ॥

पाडूगण रा रण मतवाळा,
 बध आवं दिग्गज थरविं ।
 जदुगण जोरवर-जवर जोध,
 थळ धिसकता सामां जावं ॥

आगें आतें पारथ रै रथ,
 इचरज स्यूं आख अटक रै'गी ।
 सेलै री इणी सुभद्रा ज्यूं
 गोमद रै हिये खटक रै'गी ॥

सन-दखतर कसियोडी सारय,
 रय वधा सामने लावे ही ।
 रणचडी सो, निजरां पसार,
 जयुवा रो जोर तकावे ही ॥

नर रे प्रणडिग पोस्र आगे,
 नारी तन उजळै भाव जिसो ।
 रण काळ जाळ रे अधारे,
 उठते भुज रे अटकाव जिसो ॥

ज्यं पाळ पडपा पण काठे
 मन रो करडाई गाळ रही ।
 भाई रे आडो वैन आज,
 सिर रो सोहाग खखळ रही ॥

सावळ रे सदा सुरंगे मुख,
 भाई सी झळक उदासी रो ॥
 ज्यं मोह छळघो ग्यानेसर ने,
 आली आख्या अविनसो रो ॥

अण भातो खारो सो गुटको,
 ज्यं एक जैर रो घूट भरचो ।
 एकर मीची पल पलकां ने,
 हरि मन मोडघो ,मजवूतकरचो ॥

निसकारे सागे नेण पूछ,
 ज्यु काठे करतव हियो दिघो ।
 इतरं रथ पूग्यो दाडू रो,
 नेडे आ दोना निवण कियो ॥

प्राप्तीस उठगोठो भुज भारी,
 धज्यो सिमरय गिरघारी रो ।
 सामे मुखड़ा हेतूना रा,
 भगनी रो, नर अवतारी रो ॥

सिर सीधो कर अरजुन दोल्यो,
 "मुजरो ही आज घणो मान्या ।
 रण आगण मे आमां सामा,
 रोजीने दाई मत्त जाण्या ॥

जिण घर कुंकूं देसर विलेर,
 पूज्या थाने नित माण दियो ।
 मोटी करण्या आळा घणिया,
 कु ताळां लुळ-लुळ निवण कियो ॥

उण घरमराज री धरा आज,
 खांडा खांच्या है स्वागत नै ।
 गंधर्व पठंगे मे आयो,
 स्हे अभै करचो सरणागत नै ॥

हरि आज मुड्या अग्गर चन्नण,
 वधियां रगता तरपण होसी ।
 गायक स्यूं पैली पारय रो,
 सिर आ श्वरणां अरपण होसी ॥

पण पाळ्यां नास खरो जाण्या,
 अइणो अरजुन रै हाथा स्यूं ।
 आ सीख थारली, नाता स्यूं
 घण बडो मानखो माया स्यूं ॥

जद भोमम नो दादो नोचो
 मारचो हे कण्ण जिगे भाई ।
 लासां रे न्गता इन्गोचो,
 हे मिनन माननै अन्नवाई ॥

जिण घरम कारण अपन्वळी
 घण नैजा मोडचा-नोडचा हे ।
 वे आज उठेना या उवर,
 अरजुन रा हाय वध्योडा हे ॥

कै'पाडू जद वोलो रे'न्यो,
 मधरे कंठा मोवन वोले ।
 " पारथ थारो वळ घण सिमरथ,
 घक्कें स्यूं घर-दिगज डोले ॥

सिव भूतनाथ स्यूं भिड ज्यावं,
 हू जाणू हूं वां हाथां नै ।
 जोधा स्यूं अडतां देख्या हे,
 पडता देख्या घड माथां नै ॥

सामे सिर सांभ खडचो सुरा,
 सागर सो सवळो लागे हे ।
 तूं एक घणो गायक ओटो,
 पण आज सुभद्रा सागे हे ॥

वे दोनूं ही रळ आ ऊभा,
 मन मोड मरोड नहीं बाकी ।
 पण गळें मुडचां, मन बळें बध्यां,
 पण सिरकण ठोड नहीं बाकी ॥

मुडता ही वरन धर्म जाये,
 वधते रो जी दुव पाये हे ।
 पण जीवण नी जं'डी घाड्या,
 मिनखा रो मोग वताये हे ॥

ह सोह रूम काजर चाई,
 पण पळट पावडो धन क्रिया ?
 ह कळाकार स्पू ग्यानी नै,
 कै' पारथ हळको करु क्रिया ॥

मन री दुवळाई दुवधा स्पू,
 हू कदै धवयो नीं थाकूलो ।
 करतव फवळाई नीं राखी,
 नीं आज जूभतां राखूलो ॥

मुरळी निसरयोडो कळाकार,
 जाहू जिण रो मरणो धारचो ।
 ललकारचो धा म्हारै वळ नै,
 जद दियो पठंगो बुचकारचो ॥

जदुवा रै जोर मानखै नै,
 अरजुन हळको मत जाण लिये ।
 तूं अडण मरण री पकड इयां,
 हूं मुडज्यास्पू मत थास किये ॥

रातै पर रीभूण नै आयो,
 कुंकू स्पू कोनी धीजूंलो ।
 थारा भुज थाक्या मानू, का,
 खाटा री धार पतीजूं लो ॥

रगतां रा नाता घणो नेउ.
 पूजा ह्यू आज नरं कोनी ।
 भारग नीं छुई नास चंत.
 आं वाता किलन उरं कोनी ॥

जे तिरलोकी आडी आवं
 तो तीन लोक स्यूं अउ जान्यु ।
 रिसिया पर दूकं अभिमानी
 वो पाप मिट्चा पाट्यो जान्यु ॥

पाहुगण रण रोप्यो, पारव,
 रण दळणो हाय पाडवा रं,
 जे राड बधाणी नीं चार्व,
 गधर्व हवालं कर म्हारं ॥”

गिरधर आ अदखी वात कही,
 तातो सो अरजुन ताक रयो ।
 बोलणनं होठ हिल्या जितरं
 पड विचं सुभद्रा इया कयो ॥

“दीरा थे पकट अणूती नं,
 इतरा तो अंवळा जावो मत ।
 कर वात वावळा रं दाई,
 च्यानेसर गूंग खिडावो मत ॥

गंधर्वं हवालं करणं रा,
 ह्यूं सुपना देखो सावरिया ।
 कद कोई जवरं जुद्धा में,
 जोरावर पाहु जेर किया ॥

वै, ये ही घड़ी-घड़ी घिरिया,
जद जरासिध रो जोर अडचो ।
प्रावो जग थाने जाण है,
स्युं मलो नांव रणथोड पडयो ॥

लूँठां स्युं अडतां वीराजी-
पण दूट्या हे आगं-आगं ।
ज्यु रथ रो पहियो ले वधिया,
भारत मिडता भीसम सागं ॥

भोळप में भूल कितो छोटी-
जुलम्यां ज्यु हाथ उठे थारा ।
वीरा कूकर इतरा हलका,
मानो ये मायां मिनखां रा ॥

अंवळी भाली है आख मोंच,
गायक रो मरण घरम थारें ।
उण सरणो लियो पाडुवां रो,
जद अभिमन्यू सिरसो म्हारें ॥

अव गळण-ढळण री बात किसी,
रण सिरसो ही रण नै मान्यां ।
जडुवां रें जोर मानखें स्युं,
पांडू रो हळको मज जाण्यां ॥

रण रुपग्यो, भिभक रती कोनी,
नों करम खेत कंचळार्ई है ।
इण करतव रें हेले आगें,
कुण वैन हुवे, कुण भाई है ॥

नंदो नानो नाने रो
 मत नाना मन मे दया-मया ।
 है मोगन वाने नानिया,
 मत आज देन रो दोभ मया ॥

हरि पुत्र-पाप रो के नानो,
 ये हित्यारा ज्यू आया हो ।
 हथनापुर रो सत उलटण रो,
 भूंडी भोळप भरमाया हो ॥

जडुवळ रो घणो भरोसो कर,
 दादा-भाई मत घरगीजो ।
 म्हे रगता स्यूं धीजा देस्यां,
 जे कुंकूं स्यूं कोनी धीजो ॥”

त्रै तीखा बोल सुभद्रा रा,
 ज्यूं तातो वळतो वापरियो ।
 गिरघर रा नैण गुलाबी हा,
 कुळसै मन, उथलो उलट दियो ।

“ तूं कियां सुभद्रा आज इस्या,
 सबदां रा सेल चुभावे है ।
 थारी आ जीभ कियां खुलगी,
 सुणतां ही इचरज आवै है ॥

जिण घर मे जलमी बडी हुई,
 घण कोडां स्यूं पाळीजी है ।
 जीवण रो जडां जठे थारी,
 उण ही कुळ पर तूं खीजी है ॥

जटुवा री वेंटी, जोर चली,
पीवर पर इती किया कोर्प ।
तू सीरी वण सागरिये गी-
वध-वध वोल्, नीका लोर्प १२

हू आज जाणती आपणला.
वट पळट पराया किया वर्ण ।
उपकार भूलग्या जूँ पाडू,
वण घोखो है तू ही उफजं १३

रणवास छोड रण मे आई-
कस वख्तर दानो रकिया रो १४
तू ऊभी श्रोतो वण आगे-
हयनापुर रँ अधिष्णतियां रो १५

भरतार भीड ले खड़ी इसी,
सा'काण नाखदी भाई री १६
वण भोळी वेंन जगत कंसी-
अरजुन ली ओट जुगाई री १७

आपो तो दुनिया देख लियो,
वाकी रेंग्यो है सूरायो १८
भुज भिड़िया हीं जाणीजँ लो,
धर खखवाळा रो धणियापो १९

आ सुण पारथ रो उणियारो,
रंग रातो होग्यो, रीस भरी ।
जटुपत नै रोक बिचै, बोल्यो
“इतरा हळफा मत बणो हरी ॥”

‘वम’ ह्यावो, जात नै-उरो
 मुण हिर, लज्जा नी नै-
 वयु श्रै-जा दे-जा को-को हो
 मन्ध्या हीं घा-उ लज्जा नै-उ ॥

श्री लोक परम, सो जग मानं.
 नारी से कियो आनने है ॥
 दे जलम जलो पीवन पन्धर.
 घर मरणो जठे नामरो है ॥

सूरा घर जलम जलो नेत्र,
 सूरा रै ही तामे रैणो ।
 सूरा रौ घरण्चा नै गिरपर,
 रण मे श्रया काई मैणो ?

इन्याव न्याव रो जुद्ध जठे,
 वयु ओछी वात विचारो हो ।
 अरजुन रो लिनख जमारो वयुं,
 धिस्कारो दे ललकारो हो ॥

ये अकरम पप जियां श्राया,
 इण घरा घरम रो धणियापो ।
 जडुपत जवरा चेतो राख्या,
 पारथ रो मरचां मिटे आपो ॥

अणहूतो अडियो देव, देत,
 नर, नारायण धारां कोनी ।
 म्हे पांडू वैं हा, सो'हारां,
 पण हिम्मत नै हारा कोनी ॥

हेलो कर कहूं स्याम सुणलो,
थांरा सं'सोच मिटा देस्यूं ।
मोवन मनडै री मजवूती,
मनसोवा सगळा ढा देस्यूं ॥

हरि मत चींत्या थे लूंठा हो,
अरजुन रो हाथ अटक ज्यासी ।
हूं आखै जदुगण एक घणो,
नी भार सुभद्रा तक आसी ॥

मत मन मे वंम रती रात्या,
मत देख वैन नै दुख पाया ।
रण आज कसर नी राखू लो,
थे पूरो बळ कर अजमाया ॥”

कै' इतरो पारथ निवण करचो,
राणी रथ पाछो मोड दियो ।
पाडू सैना रै आगै ला,
जदुपत रै सामै खडो कियो ॥

जद पारथ फूंक्यो देवदत्त,
तो पांचजन्य परमेसर रो ।
वा गाज हुई, गज चिघाड्या,
ह्य हिणक्या, तन घूज्यो धर रो ॥

भुज फडक्या सवळै सुरां रा,
बीजळ सी बाढळ्यां भळकी ।
लोही मे न्हावण लो' हंसियो,
अण गिणती घण अणियां पळकी ॥

'नीलो नर नरो जगत् न
 नीले नीला न नारायण ।
 वल्ल भक्ति री नारायण ॥
 व'वाला नरना नारायण ॥

तन वदना हनीया ना पुदना-
 तरवार प्यारा फुट हा ।
 जाया बीजल ज्यु वल्ल ना-ना,
 कट-कट बटका मे हूँ हा ॥

खंका भटका भुरजाळा रा,
 रगता मे भिळ विपरं डाळा ।
 काया री समता 'माया रा,
 'ज्यु' भटकां भई खिडे जाळा ॥

कटिया भुज-नाथा, कट पगला,
 घड, माया निखरचा 'रो नेळो ।
 ज्यु हेत सिट्यो रग रगत 'पुं,
 मो' मास, माम रे ही नेळो ।

लोथ परं लोथा 'पंड 'पटगी,
 होमी लोही रे भीज्योली ।
 भिळगी हे रग कसुं वल्ल भि,
 ज्युं श्राव खार ज्युं खीज्योली ॥

धवळां री धमळां ज्युं उरी,
 कण रळचा मरुद री गोठ वणी ।
 ज्युं धर री वल्ल नभ निजगर्व,
 इण कारण प्राठी श्रोठ वणी ।

का जोधां मांडचो मरणजिगा,
 भख भूखो काळ लुकावं हे ।
 का प्राभं आडो ओलो वे,
 धण धरतती रगता न्हावं हे ॥

का मिनख मानख पर रीझ्या,
 धारा धो पग पूजीर्जे हे ।
 का रातो दुळियो हिगळू सो,
 अवनी री माग मरीर्जे हे ॥

जम री जाडा पर नाच-नाच,
 मंकर सो ताडव सूर करे ।
 पारथ सारथ अं'डा टकरचा,
 ज्यूं भोम भिळचा हीं आज सरें ॥

अणकूंत्यो जोर भुजावां रो,
 कडकें हो काळ कवाणा मे ।
 बीजळ सी भळकें घडी-घडी,
 आभें टकरातें वाणा मे ॥

ज्वाला धधकाता अगन अस्त्र,
 अवनी ढक ज्यावे अगारा ।
 घन घटा उलडे मेव बाण,
 जळ भडै, पडै जाडी धारा ॥

का वेग अणूतो आधी रो,
 आवें ज्यू विस्व उडावेंलो ।
 भव-भूत मिडै हा इया, जियां,
 सो' जीव जगत मिटज्यावं लो ॥

नर-नारायण रो जुद्ध हुवै,
 डर स्यूं तिरलोकी धूज रही ।
 भुजवळ स्यूं इळा उळट देवै,
 श्रै'डो सगत्यां श्रड जूझ रही ॥

घनत्याम पसीनं मे न्हाया,
 कर जोर बध्या चावै श्रागै ।
 पण श्रांगळ कोनी सिरकण दे,
 नी पार पडै पारथ सागै ॥

गिरधर रो वार जको श्रावै,
 श्ररजुन उळटो उळटावै हो ।
 नर रो हद हाव बध्यो श्रै'डो,
 ज्यूं हरि री हसी उडावै हो ॥

लडतां नै घडिया पै'र हुया,
 जद सूरज सिखर ढळण लाग्यो ।
 पाडू रो दळ हावी होग्यो,
 जदुवां रो जोस गळण लाग्यो ॥

पग पाछा सिरकं सूरं रा,
 ज्यूं छेकड रो छेडो श्राग्यो ।
 जद कोपै हरि रो एक बाण,
 सर्णातो श्ररजुन रै लाग्यो ॥

नर अपर बळी रो तन उलड्यो,
 बण लोथ जियां, मुरछा श्रागी ।
 चट पळट सुभद्रा सिर सान्यो,
 मुरभी सी सांस सरण लागी ॥

दिव , पडियां हिवडो ढव कियां,
 राणी री छळकी आखडल्यां ।
 आसूडां ओस ढळक चाली,
 ज्यूं राती पंरुज-पाखडल्या ॥

पारथ डिगग्यो, भारत डिगग्यो-
 प्राधार डिग्यो पाहू गण रो ।
 भिडतै जोधा रा भुज थमग्या,
 सर्णाटं मे रोळो रण रो ॥

हरि हाथां ढायो हेतूलो,
 हिवडै मे भभको अगनी रो ।
 ओ प्यारो पारथ मुरड्यो है,
 भरतार टिग्यो है भगनी रो ॥

चित उठिये ज्यूं दोडचा गिरधर,
 नैणा मे हिवडो गळ घुळग्यो ।
 ज्यूं घणं जतन स्यूं राख्योडो,
 लोभी रो आज रतन रुळग्यो ॥

हरि आंता देख, सुभद्रा उठ,
 गळगळी कयो " थम ज्याया ये ।
 ओ पाप पड्योडा भुज भाई,
 पाहू रं मती लगाय ये ॥

पारथ पडणं री पीड घणी-
 था गजळ करच्यो है गिरधारी ।
 पण हथनापुर हारचो कोनी,
 नों थाकी सांत सुभद्रा री ॥

ओजूं तो आधो बाकी है,
 आगीनें पग मत सिरकाधो ॥
 है धरमराज री आण स्याम,
 ये म्हारी हद मे मत आवो ॥

जे दया-मया-ऋणा जागी,
 तो वा दुबळा तातर राखो ।
 ओजूं तो पण ओखो पळसी,
 अडियोडा आपो मत नाखो ॥

तिरवाळो आयो पांडू नै,
 जद सोयो पाछो उठ ज्यासी ।
 घण बळ आळा सिमरथ भाई,
 जीतण मे जोर घणो आसी ॥

नों हेत प्रीत री अं घडियां,
 भूलो भेळप नै मुड्ज्यावो ।
 जे इण उपरान्त आवणो है,
 तो वीध सुभद्रा बघ आवो ॥”

कै' इया हाथ गांडीव लियो,
 गीली पलकां मे रीस रमी ।
 ओ देख वैन रो सगत रूप,
 एकर जटुपत री नाडू नमी ॥

बोल्या “तै वैन घणो वींध्यो,
 बोला रै वाणा आज मनै ।
 हिवटै रा घाव नहीं दीलै,
 जे कहू तनै, के कहूं तनै ?

तूँ अर्ध सुभद्रा वस करदे,
 हूँ आज घणो हौँ जैर पियो ।
 कैं मुढ़या गळ-गळा सा गिरधर,
 रथ पर वँटचा सिर भुजा लियो ॥

हूनी सी सडी सुभद्रा जद-
 थाकी सी नाख्यो निसकारो ।
 इतरें हो चेत जवर पाइ,
 नर उठियो खीज्योड़ो सारो ॥

घण रैं हाथां स्यूँ धनुस लियो,
 सिर केस खिडचा प्रवधूत जिया ।
 वर जाइ जड़ाको, जास खीच,
 घण कोप भाभडाभूत जिया ॥

घायल तन तातो रगत भरै,
 उण हौँ रंग रळतो उणियारो ।
 बिकराळ काळ सो कुंताळो,
 खीरां सी जगती आख्या रो ॥

सबळ भुज मे खैनास सगत,
 पासूपत भाळ भले भाली ।
 पळकें मे मुळक्यो महाकाळ,
 अग जग धूज्यो, धरती हाली ॥

भूतळ खलवाळा भूप आज,
 ज्यूँ मूळ मिटासी जीवण रो ।
 सावरियें साम्यो ब्रह्मअस्त्र,
 किल्याण कापग्यो कण-कण रो ॥

सळ पड्यो व्हा रं निना-
 भूं भूतनाथ री वळ पाई ।
 उणमुणं हं री तन जाण्यो,
 मुर नर री सगत्या वर्राई ॥

समदा री छोट-हवोळ न्हो.
 याक्यो सो थमग्यो वायच्यो ।
 जम ठोडु ठंरग्यो श्रार्भं मे.
 रवि रं रथ री वधतो पहियो ॥

मंभळ्यो सासा नं रोक मेव,
 दस दिग्गज सावधान जमग्या ।
 ज्यूं आगत लख्यो, विसाई लै,
 सगळाई भूत भिळण सभग्या ॥

जवरां रं कोप जगत पूग्यो
 विध्वंस नास रं कंगारं ।
 वं सगत्या चढी कवाणा पर,
 चाल्याऊं राख उडे लारं ॥

जद हेलो एक श्रचाणचको,
 "ठंरो भुज रीको थमज्यावो" ।
 सिर घूम्या पारथ सारथ रा,
 कुण करचो हाथ नं श्रटकावो ॥

हडवटियोडा हाको करता,
 दो रिती दीदता श्राव हा ।
 श्रं पूजनीक 'नारद' 'गानव',
 रथ हा उठा रीकार हा ॥

आ लडवा दिचाळी तोनू ही,
 तन घणै पसीनै भे न्हाया ।
 हंसा केसा रै हापयोडे,
 गालव गिरधर नै बतळाया ॥

गळगळी कठ फूनी वाणी,
 लढुङ्गती सी आलउती नी ।
 “हूं नहीं विचारचो इतो नास,
 नी चींती हाणी हुवै इमी ॥

जदुपत अब जोर रैण-दयो थे,
 संघार करो मत सिसटी रो ।
 मनडै रो काळो कोप मिटचो,
 अभिमान गळचो म्हारै जी रो ।

म्हारो दोमी गंधर्वराज,
 हू खमा करूं अपराधी नै ।
 धनळां अब धवस करो मत थे,
 रोको वधियोडी व्याधी नै ॥

निरदोस जगत नै मत मेटो,
 अपराधी है गालव थारो ।
 रण में जूझै जोधावा रो,
 दोसी हूं आखी दुनिया रो ॥

जग ताप विकार हरण बानो,
 वो रिसी दंभ में इसो ब'यो ।
 ओ नास अरे कितरो मोटो,
 पिछतावै जोगो नही रयो ॥

कितरे जीवां रो पाप आज,
गालव रै सिर पर आयो है ।
दुख हुयो जगत नै कितो बडो,
हू आप कितो दुख पश्यो है" ॥

कै'रिसी बिळखग्यो दाळक ज्यू,
रथ नीचं उतरत्ता गिरधारी ।
कर निवंगण कयो, "धर घणियास्यू,
धण बडो प्रतिरठा ग्यान्या री ॥

ये पुन्न रूप ही पूजनोक,
महमा है महर अद्दुट करो ।
आ करुणा आज जकी फूटी,
हिवडं में रिसी अखूट करो ॥

नर दुरबळ वेंध्यो विकारां में,
आखडतै रर आघार वगो ।
जग पाप-ताप स्यू तपतै नै,
ग्यानी ये सेतळ धार वणो" ॥

कै' हरि चाल्या पांडू कानी,
रथ पर ही बँठयो हस्योडो ।
बोल्या-"जदुपत री अगवानी,
अरजुन सारं तो आ घोडो ॥

आखी ही उमर जुद किया,
जद आज थक्यो से'डो काई ।
आगत री स्वागत नहीं करे,
उण-मुणो हुयो पुंन दाई ॥

हूं म्हारै सत, तूं थारै पर,
 अड लड्या मानखै रै खातर ।
 हूं आप घणो हीं पीडीज्यो,
 तूं इतो अणेसो तो मत कर ॥

कुण जाणं कितरो जीव दुण्यो,
 जद तै पर हाय उठ्यो खारो ।
 पण आखडतै रो मितर पर,
 अधिकार इतो तो हो म्हारो" ॥

कै' रुस्योडं नेही सामै,
 नारायण आप निवण करियो ।
 अणहद पोरस नद ढळंजिया,
 पांडू रथ नीचै ऊतरियो ॥

मुरझ्यो सो लुल्यो पगां कानी,
 सांवरिये वाथां मर लीनो ।
 भिळतां दोनू विम्भळ होग्या,
 भुज घेरो काठो कर लीनो ॥

गीलै कंठा बोल्या गिरपर,
 "तै आज घणो उपकार कियो ।
 पारथ तूं आज घणो प्यारो,
 मितर रे किसन उवार लियो ॥

जे भार उठा सत रो सिर पर,
 तूं पांडू आज नहीं आतो ।
 तो गळता मंतर गीता रा,
 सो ग्यान अरुारथ ही जातो ॥

हूँ जाटू, मोटी दाव लगा,
तूँ पाज घणो दुव पायो है ।
पण मोटो जस तं हौँ जीत्यो,
मिनरा मे मिनन जगायो है ।

तूँ वणी प्ररणा चारय री,
तूँ हौँ मिसरय सवती नर री ।
तूँ आज ठोड खड़ सारय री,
मीता ही वण्णी गिन्वर री ॥

छोटी तूँ घणी बडी होगी.
पत पाळण हेमाँचळ वणगी ।
बो देख्यो थारो रूप आज.
भगती सी अचळ अटळ वणगी ॥

दोनू हौँ कुळ उजळाय्या तं,
हद कर हिबडो हुळसं म्हारो ।
आ भाई री आसीस वै'न,
सोहग अखड सदा थारो" ॥

कौं कंबळो भुज सिर पर फेरचो.
हिबडें री कळी-कळी खुलगी ।
अनस री पीड़ सुमद्रा री,
घुळ नैण अणेसो ले हुळगी ॥

रू'धै कंठा स्पूँ इतो कयो,
"हूँ आज लाघदी सरजादा ।
जदुपत नै छोटा बोल कया,
छोटी हूँ खमा करचा दादा" ॥

कैं, ह्यां, चुम्बरा पीघळगी,
हरि ओजूं त्तिर पर हाय घरचो ।
पण निजर घूमगी, नारद रो
जद नैटं निसकारो निसरचो ॥

सुत बृमां रो मोटो न्यानी.
शासवतीहीण उदास जको ।
नर, देव, दैत नै एक जिसो,
सगळा रो सम विसवास जको ॥

जिण नै पाताळ, सुरग, घरती,
माया रो लेप नहीं लागे ।
संकर कंलासपती छळलें,
दो काम थकं जिण रै शार्गे ॥

पापा नै ढावण नित जागें,
जुगती स्पूं मारग कर देवं ।
ओ धयक रिसी कल्याण रूप,
थाक्योडी तास कियां लेवं ?

हरि निजर टेकवी नारद पर
जिग्यासा जागी नैणा मे ।
जद देव रिसी तेजस्वी री,
वाणी फूटी धा वैणा में ॥

“जदुनाय सुमद्रा पारथ तो,
ने' नोरा स्पूं मन ज्यादला ।
पण जफा रेत में रल्या मिनख,
धे कियां मनाया जावैला ?

रस्या, बढ विलरचा कोसां में,
 वाता रो लेस नहीं लागै ५
 भव भूखै गिरज गादडा रो ..
 इतरो ही सेस पडयो आगै ॥

का जका काळजा श्रै दूटचा,
 बांरा निसकारा बचग्या है ।
 सिळगे हिवड़ा रा श्राप बच्या.
 का श्रातू खारा बचग्या है ॥

काटचा मिनखा नै मिनख श्रठे-
 नर वणग्यो नर रो हित्यारो ।
 स्यूं रगत मस रो लोथा रो,
 मुडदा रो लोक बस्यो न्यारो ॥

नर रै हाथा नर बळी इया,
 नारायण कद तक होवैली ?
 कद ताई धरती सिसक-सिसक,
 धन इया अमोलख खोदवैली ?

जुद्धा स्यूं न्याव किता दिन ओ,
 हूं बूभूं हूं गिरधर धानै ?
 सत साख कसौटी वण पसुवळ,
 कद तक धूजाती दुनिया नै ?

अधिकार मानखै रो निरणै,
 रण रोळा कद ताई होसी ।
 आ काळख ओ अज्ञान पाप,
 कद मिनख तिलाडी स्यूं घोसी ॥

रण अंधकार रो नीलमणी,
 छेकड रो छे रे कद आती ।
 सत-असत न्याव अधिकारा रो,
 कद ग्यान कसीटी वण ज्यानी ॥

भुज थारा नरा सिमरथा रर
 कद ताई रगत खिडावैला ?
 विसवाल प्रेम रो जाग जगत,
 कद उळ्ळ्योडी सुळ्ळभावैला ?

ये दोनू जग रा प्रतिनिधि हो,
 दोना नै दुनिया पूजं है ।
 ओ नास देखता, नारद रो,
 हरि आज आतमा धूजं है" ॥

इण तरिया कळप्या देवरिसी,
 मुख करुणा चिंतन भळक रगे ।
 जग दुख स्यूं दुखतै ग्यानी नै,
 ग्यानेसर गिरधर इयां कयो ॥

"दुनिया मे स्वारथ दंभ-असत,
 नित नाच रया रण रुकै किया ?
 अकरम स्यूं जुग-जुग जूह्यो है,
 नर भुक्यो नहीं, नर भुकै किया ?

मन मिनखां जको विकार बसै,
 सत्ता मे अहं जको रं'वै ।
 बळ बघियो दंभ अकरमा भिळ,
 रण नै भाला देतो वं' वै ॥

ज्यूं निवतो जात्रं धरमराज,
दुरियोधन सिर चढतो जात्रं ।
जद छेऊड छेडे देवरिसी,
काळो दिन कुरधेतर श्रावें ॥

रण थकै मानवें रो हेलो,
अधरम स्यूं धरम टकर ज्यात्रं ।
लूंठा लूंटी चात्रं धरती,
जुद्धा रो अंत कियां श्रावें ॥

अपजोरा भोम भिळावण नै,
अणहंत अडें रण ललकारें ।
धर धरम, मुलक रो माण, आण,
जद वीरा नै हेलो मारें ॥

नर रो सिमरय नर चींयीजें,
सांसां रो भार हुवें ओखो ।
जद ग्यानी नारद, कायर ज्यूं
जीणें स्यूं जूझ-मरण चोखो ॥

इन्याव-असत हद नै लोपै,
अकरम-अधरम वधतो श्रावें ।
पत-पाळण मिनख-मानखें री,
जद छात्रधरम रण रोपावें ॥

रण माडो करम जगत जाणै,
पण हद रै नाकै भालीजें ।
डांगर नी धिरै दकाळ्या जद,
लाठ्यां हीं खेत रखाळीजें ॥

ओ मोटो भार माणसां नै,
 पण अंत-पंत रो छेडो है ।
 जद बोझ धरा स्यूं भलै नहीं,
 इण स्यूं हीं हुवै निवेड़ो है ॥

रण नै अघरम मत को' नारद,
 अघरम बधियै रो औसद है ।
 सगती पूजा रो संख-नाद,
 ओ करम अकरमा रो हद है ।

रण जद-जद लोक धरम कारण,
 तो परम पुन्न परमारथ है ।
 मरजाद मानखो राखण नै,
 नर पूरां रो पुरत्तारथ है ॥

त्यागी, वंरागी परमहंस,
 वृमग्यानी इण स्यूं न्यारा है ।
 नै लोक धरम निभणी आवं.
 मरियोडा मरम जका रा है ।

का लाज-हीण मुडदा कायर,
 कूटा भव तिसणा मरियोडा ।
 जीवण रै लालच निव्या रवै,
 मरण रै डर स्यूं मरियोडा ॥

जग देतो आयो जुगां-जुगां,
 दारै धिर्कार जनारै पर ।
 नै मुलक मानखै मरण जोग,
 लख सान्त उण उणियारै पर ॥

रण झालै वै भोमी भोगी,
 द्वात्या पर तीखा सेल सबै ।
 धर धणी सत नी निभै कदै,
 नी तंत-वायरा लोग रवै ॥

हे साति विचारक ग्यान्या नै,
 धर परसराम सबळो देवै ।
 तो ही आ घटी-घड़ी धिर-धिर,
 जोधां नै पाछा वर लेवै ॥

सिर राख्या सदा हयेळ्यां पर,
 दा सबळा भोमी भोगी है ।
 रगती री भगती करै जकी-
 दुनियां नी दुवळां जोगी है ॥

धरती जोधां री, जुद्धां री,
 नी संता आळो बाड़ो है ।
 आ खेती खसै जकारी है,
 मल्लां रो बडो अखाड़ो है ॥

जुद्धा, जोधा, रै गीतां स्पूँ,
 इतिहास बध्या है जाता रा ।
 धर धीजी रगता माया स्पूँ,
 नी मुलक बस्या है बाता रा ॥

सुरापै हींणा रा सासण,
 मिटता जावै रण रोळा में ।
 ज्यूँ तोफानी भट भलै नहीं,
 वै ज्याज समंद री छोळा मे ॥

रण धक्को कायर, कंवळां, री,
 डुवळा री दुनिया उळटावै ।
 ओ काटो हाथी तोलण रो,
 कुतिया काणा मे तुल ज्यावै ॥

रण कदै फ्राति रो रूप वणै,
 रण कदै अणूतो हाण करै ।
 षण घिर-घिर घेरा दै, नारद,
 डुवळा सबळा री छाण करै ॥

स्त, रज-तामस, गुण भावां रो,
 रण हुवै मिनख रै अंतस में ।
 इण तरिया अक्षरम-धरम अडै,
 नित धरण धिकै रण रै वस में ॥

व्यूं मथ हिंये नै भाव सदा,
 जुद्धा स्यूं घरा मथीजैली ।
 आतम तो अजर अमर नित है,
 नी छोजी है नी छोजैली ॥

ले मरण जीण रो हरख सोक,
 सत छोडै कायर इग्यानी ।
 नारद पथ भूल्या जिसी बात,
 थे कियां करो मोटा ग्यानी" ॥

कै' मोघन मुळदया मौन हुया,
 जद उथलो दीनो देवरिसी ।
 बोल्या "जे रण अँटो सत है,
 तो साति भावना भरम जिसी ॥

मरजाद - मानसो - धरा - धरम,
 जे जगत भरोमें रण बळ रें ।
 मोवन जे मगळ मिनखा रो,
 टिकियो आधार अमगळ रें ॥

अकरम जुद्धा रें जोर हवें,
 जे ग्यान प्रेम उपचार नहीं ।
 तो इण धरती रो अत्र गिरधर,
 अपकार हुवें उपकार नहीं ॥

पासूपत परळें करण काळ,
 नर रें हाथा मे महानास ।
 जग जीवण रो विसवास टिगें
 किल्याण होण रो किसी आस ॥

पल में रीजें, हसैं, खीलैं,
 पल-पल में भाव पळट ज्यावें ।
 मन कितो मिनख रो अपजोरो,
 रिसियां रो आपो उफणावें ॥

जिण रो हिंवडो ही वस को ती,
 उणरें कावू मे महाकाळ ।
 जटुपत थे आप विचार करो,
 ओ जोर ढळेंलो किसी ढाळ ॥

कुण जाणें मिनख अनूतो वण,
 कद आपो भूलें कोप करें ।
 जाणें कद जगत मिटा देवें,
 धक्के स्पूं धरती लोप करें ॥

बळ सीवा लांध वधो श्रागै,
 सिसटी रो मोटो श्राप दण्यो ।
 रण लीक लोप सघार हुयो,
 अन्न अधम पाप सत्ताप नण्यो ॥

ओ वृम-अस्त्र ओ पासूपत,
 ओ हेलो होड लगावण रो ।
 नी मगळकारी गिरधारी,
 आधो बळ भोम भिळावण रो ॥

जुद्धां पर घरा टिक्योड़ी है,
 हरि अर्चं मानता आ मान्यां ।
 नर रो मुठ्ठी खैनास खड़यो,
 नई ही अंत हुयो जाण्यां ॥

भिळसी सत, असत, करम, अकरम,
 इन्याव, न्याव, अणहंत, हंत ।
 भट्कं ने आखो जगत मिटे,
 जद पाप पुन्न रो किली कूंत ॥

रण करं जका नी करं जका,
 दुवळा, वृढा, दाळक, नारी ।
 दोसी अणदोस दया जोगा,
 मिटसी दुनियां पसु पंयारी ॥

हं मानू भोम बटघोडी है,
 न्यारी सत्तादां मत न्यारा ।
 जन-गण न्यारा, जातां न्यारी,
 अधिबार अइपां रा सत न्यारा ॥

पण न्या- पर्ण रं नेचं स्यूं,
जे अच नर ऊचो नी आसी ।
तो स डाळा सागं ढंसी,
जग-रुंख मूळ स्यूं मिट ज्यासी ॥

आ तमोगुणी सगती पूजा,
मारग हिरणांकुस-रावण रो ।
आं छोळां, समद हवोळां रो
भोलो जग ज्याज डुवावण रो ॥

सिमरथ हरि थे ग्यानेतर हो,
ग्यानी नं ग्यान किसो देणो ।
किल्याण विचारो दुनियां रो,
म्हारो तो इतरो ही कं'णो ॥

अं तन जोरावर मिनखां रा,
वीट्यां में बढियोडा सोवं ।
कागा कावळियां गोरज गीध,
घोगडदं गदडीया रोवं ॥

अनडो मिछळावं घडी-घडी,
नी ठोड ठंरणं जंड़ी है ।
रवि आथूगं नाकं पूग्यो,
संघ्या री बेळा नंड़ी है ॥

संता नं मोडो मुडो अबै,
पण विनय विचारण री थास्यूं ।
गढ घरमराज रं हथनापुर,
हं देव द्वारका धिर आस्यूं ॥

ओ जग थाक्योडो जुद्धा स्यूं,
 अब पाप लारला घोणा है ।
 उळ्झ्या आटा सूळभावण रा,
 दूजा ही मारग जोणा है” ॥

कै' नारद हरि पर निजर टिका,
 बोला रै'ग्या, वाणी थमगी ।
 पारथ री दीठ, सुभद्रा री,
 गालव री गिरधर पर जमगी ॥

नैडै आये रथ रै सारै,
 ऊभै, जदुनायक री वाणी ।
 चित्तण री लीक लीलाड़ी पर,
 आंखडल्यां रो पळकै पाणी ॥

“संधार अस्त्र रो भै' भारी,
 पण भै' तो भाव नहीं बदलै ।
 बळ घषको बळ स्यूं भालीजै,
 ओ जगत सभाव नहीं बदलै ॥

सुख सांती भली, निरमाण बडो,
 इतरो तो आखो जग जाणै ।
 पण रण बळ आडी हृदवंदी,
 जोरावर जवरा कद मानै ॥

बळ सस्त्र सगत-पर मुलकां रो,
 आतम विस्वास टिकै नारद ।
 नी साती निभै समभोता स्यूं,
 सगती समतोल धिकै नारद ॥

बळ बिना वावळी बुद्धी है,
बळ कोपुं तो छेड़ो रण है ।
रण कुण चावै, पण हो ज्यावै,
करमां स्यूं मोटा कारण है ॥

रण, ग्यान, प्रेम रै याकेलें,
उपज्यो उपचार अजै कोनी ।
हृद अवली ओड़ी उळभी रो,
हूजो आघार अजै कोनी ॥

पण तो ही भनी विचारण रो,
धर धरम बडो मिनखां रो है ।
जी चावै जद आया नारद,
ओ किसन सदा ही थांरो है ॥

रळमिळियां वंठ विचार किया,
कोई सुळभेड़ो सार हुवै ।
तो हूं हाजर हूं देव रिसी,
सिसटी रो जे उपकार हुवै" ॥

कौं जदुपत रितियां नै निचिया,
सिर भुक्क्या सुभद्रा पारथ रा ।
आसीस देवता मुडुघा मुनि,
घोड़ा हिणक्क्या हरि रै रथ रा ॥

भुज फेरयो सीस सुभद्रा रै,
पग पायदान पर स्याम धरचो ।
रथ पर चढतां नारायण नै,
नर पारथ ओजूं निवंग करचो ॥

गोपाळ कचो सुण कुंताळा,
 नारद री वात विचार करे ।
 पण जको रास्ट्र रो खलवाळो,
 उण छात्र धरम नै मत विसरे ॥

हूं आज जियां हीं नित तत पर,
 दिढ नैचो कर मजद्वत रहे ।
 कंवळो दण भूल भावना में,
 मत कदे अणूतो पाप सहे ॥

अरजुन बोत्यो आं जुद्धां स्यूं,
 जी दोरो घणो अणमणो हे ।
 पण हूं तो आही भाल खड्गचो,
 सैनिक हूं धरम जूझणो हे ॥

मन दाह्यो, दाभ वणी मन री,
 रगतं मे न्हाचो कित्ती वार ।
 जीर्ण मरण रो भरम गयो,
 अरव नी विचार, नी जीत हार ॥

चित समंद ह्योळ भवोळ उठी,
 कितरी छोळा छळकी निसरी ।
 हू जीत्यो जद कितरो रीत्यो,
 कद पीट गुणी नर पारथ री ॥

संपीडचो, थक-थक अथक हुचो,
 जीवण जुद्धां मे रम गमग्यो ।
 हूं पारं बोला धिर यमग्यो,
 गिरधारी होय जरु जमग्यो ॥

श्रव आछी माड़ी चितण रो,
 ये थारं ही सिर भार धरो ।
 सैनिक तो सीस भुका मानं,
 ग्यानी हो जका विचार करो ।

र्यूं हुकम करो थे, धरमराज-
 दिठ नंचे दाव लगा देस्यूं ।
 जिण दिन कं'देस्यो सांवरिये,
 पासुपत तोड वगा देस्यूं ॥

थे देव बत्ताओ जकी दिसा,
 अरजुन चाललो उण पथ पर ।
 कं' इतो सुभद्रा रं सागं,
 पांडू मुड़ग्यो चढग्यो रथ पर ॥

इण पीड भरं सिमरथ नर में,
 श्रधा भगती रो वास कितो ।
 दिठ नंचो, नेव, निवण कितरो,
 अणडिग निरभं बिसवास कितो ॥

रथ सिरक्या, बीच बघण लाग्यो,
 हरि मुड-मुड ला'वो तो लें हा ।
 पलका गीली अपलक दीठी,
 जाती जोड़ी नै निरखें हा ॥

दो दळ अडिघा, मुडिघा पाछा,
 धसळां रा धरा निसाण रया ।
 नरमुंड, हाड का रगत मांस,
 मुडदां रा सेस मसाभ रया ॥

इण तरियां जुग-जुग जग छीज्यो,
जुद्धां स्पूं त्राण मिल्यो कोनी ।
घरती रै मिनख मानखै तै,
ओजू ओसाण मिल्यो कोनी ॥

—: समाप्त :-

भूल सुधार

पानो	छद ओळी	भूल	सही
क	१७	जसम्या	जलम्या
क	२८	वैद्यव्य	वैधव्य
८	२	रुखाना	रुखाळा
९	१ ३	बुभै	बूभै
११	३ ३	महिपा	महीपा
१२	६ १	तक्या	तक्या
१६	२ २	जूभलै	जूभलै
१७	६ ४	सीतव	सीतळ
२०	५ १	मार	भार
२५	४ २	भळके	भळक
३२	४ १	रुपज्यामी	रुपज्यामी
३६	४ ४	धरम	मरम
५०	६ ३	लिको	लियो
७३	४ ४	मेळो	भेळो
७४	१ ४	धरती	धरती



